ज्ञानामृत

मार्च, 1987 वर्ष 22 ❋ अंक 9 मूल्य 1.50

नई दिल्ली: इंदिरा गांधी स्टेडियम में ब्रह्माकुमारी ई.वि. विद्यालय के स्वर्ण जयंति वर्ष के समापन समारोह का उद्घाटन कर रहे हैं भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिंह जी, दादी प्रकाशमणि जी, फिलिपाईन के उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी बहिन सिलयास डायज लॉरिल जी।

माउंट आबू: ओमशांति भवन में ५वें विश्वशांति सम्मेलन का उद्घाटन दृश्य। गुजरात के राज्यपाल भ्राता रामकृष्ण त्रिवेदी जी, दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य दीप प्रज्वलित कर रहे हैं।

माउंट आबू—९ फरवरी—ब्रह्माकुमारी ई.वि.विद्यालय की स्वर्ण जयंति के समापन समारोह तथा ५वें विश्वशांति महासम्मेलन के शुभारंभ समारोह में मंच पर (बाएं से) जगतगुरु बालगंगाधर स्वामी अध्यक्ष आदि चुनचुनगिरि मठ कर्नाटक, दादी प्रकाशमणि जी, बहन चन्द्रिका कीन्या, महाराष्ट्र की शि एवं विधि मंत्री, तथा दादी जानकी जी।

माउंट आबू: अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन का उद्घाटन दृश्य । राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष भ्राता गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी जी, दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

माउंट आबू: 'अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ सम्मेलन' का उद्घाटन दृश्य । कौलसिंह, हि.प्र. के स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री, दादी प्रकाशमणि जी तथा डॉ. आर. एम. वर्मा प्रसिद्ध न्युरो सर्जन दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

माउंट आबू: राजस्थानी विश्व सम्मेलन में देश-विदेश से आए प्रतिनिधि मुख्य ब्र.कु. भाई-बहिनों के साथ ओमशांति भवन के समक्ष।

माउंट आबू: 'अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन' में भाग लेने आए प्रतिनिधि मुख्य ब्र.कु. भाई-बहिनों के समक्ष ओमशांति भवन के समक्ष।

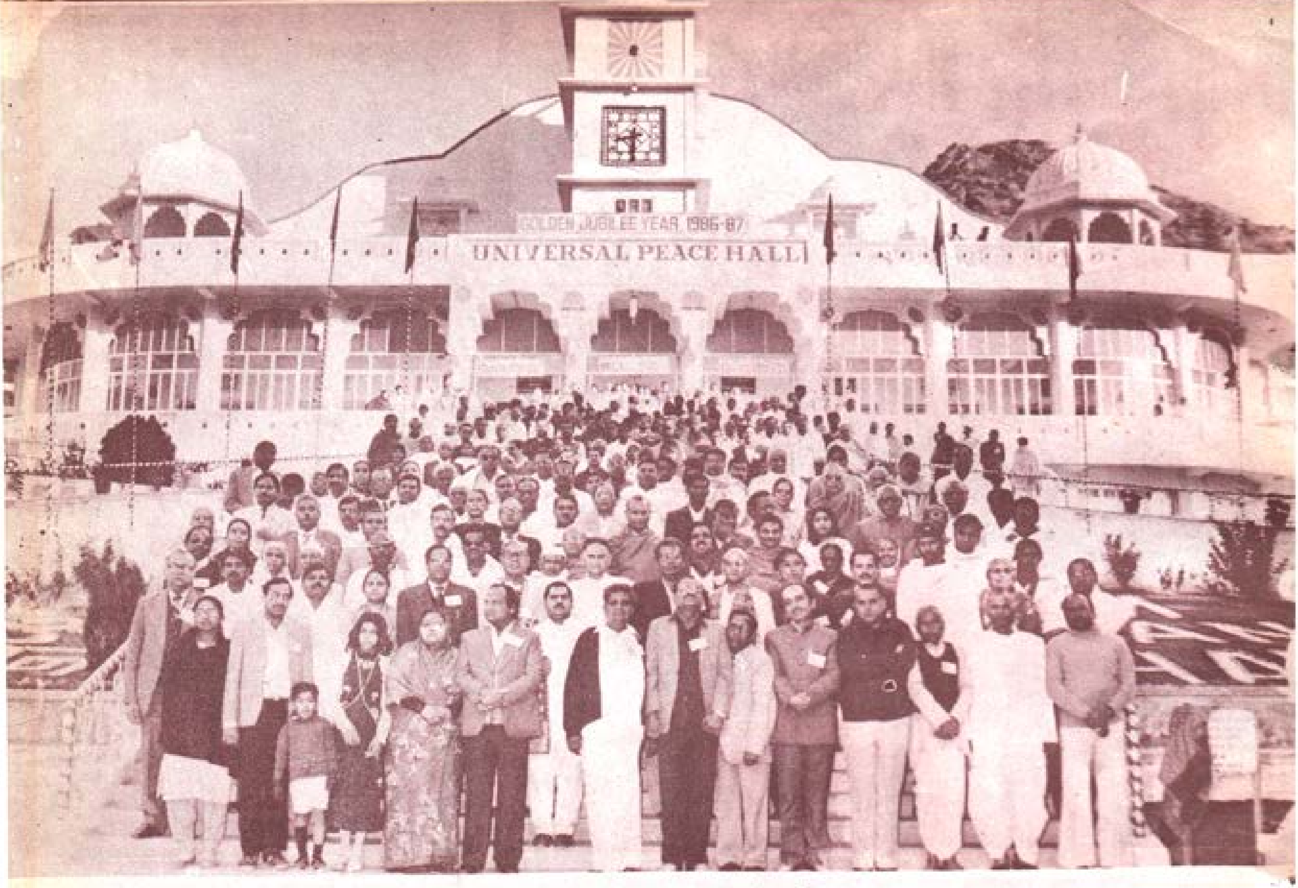

माउंट आबू: ५वें विश्वशांति सम्मेलन में पधारे प्रतिनिधि ओमशांति भवन के समक्ष।

माउंट आबू: ५वें विश्वशांति सम्मेलन में भाग लेने विदेशों से पधारे प्रतिनिधि ब्र.कु. भाई-बहिनों के साथ ओमशांति भवन के समक्ष।

अमृत सूची

१. शांति के पथ के अनुगामी बनें १
२. चारों महासम्मेलनों की कुछ उपलब्धियां (सम्पादकीय) २
३. शुभकामना संदेश ३
४. ब्रह्माकुमारी बहनें आवश्य ही विश्व में शांति स्थापित करेंगी ४
५. विश्व शांति एवं विश्व बंधुत्व के लिये ब्रह्माकुमारी बहनों का कार्य अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है ५
६. शांति की ईश्वरीय शक्ति से ही विश्व में शांति होगी ७
७. शिक्षाविद् एवं युवा कार्यशाला ८
८. मानवता के नव निर्माण में एवं विश्व शांति में मेरे व्यवसाय का क्या योगदान हो सकता है? १०
९. विश्व में आपसी तनाव एवं लड़ाई-झगड़े समाप्त करके सद्भावना एवं शांति लाने हेतु पांचवे विश्व शांति सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित १२
१०. पौष्टिक आहार—सम्पूर्ण स्वास्थ्य १३
११. साईकोडाइनॉमिक्स ऑफ पोज़ीटिव हैल्थ १३
१२. राजस्थानी सम्मेलन का स्वागत समारोह १४
१३. अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्घाटन १६
१४. उद्योग में शांतियुक्त प्रशासन कैसे हो? १८
१५. महिला कार्यशाला १९
१६. ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की शिक्षा जीवन में मधुर रस भरती है २०
१७. भारत की संस्कृति महान है क्योंकि इसका स्थापक स्वयं परमात्मा है २२
१८. भावी भारत के निर्माण में व्यवसायियों की योगदान २३
१९. स्वर्णिम युग की स्थापना के लिये ईश्वरीय योजना २५
२०. अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन—स्वागत समारोह २६
२१. मादक पदार्थों का नशा एवं अनिद्रा से छुटकारा २९
२२. स्वस्थ जीवन के सिद्धांत ३०
२३. अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन का समापन समारोह ३१
२४. सन् २००० तक सभी के लिये स्वास्थ्य ३२

शांति के पथ के अनुगामी बनें

—ज्ञानी जैल सिंह

नई दिल्ली—फरवरी ६— भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने कहा कि विश्व में हिंसा तथा अणु शस्त्रों के बढ़ते हुए खतरे के समक्ष भी शांति और भाईचारे का युग लाएं वे इंदिरा गांधी स्टेडियम में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंति वर्ष के समाप्ति समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि मानवता के लिये केवल दो ही रास्ते हैं। एक नफ़रत का रास्ता है जिसमें मानवता भस्म हो सकती है, दूसरा प्रेम का रास्ता है जिस से प्रेम और भाईचारे की लहरों पर तैर सकती है। सेवा और त्याग की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि विश्व जहां भिन्न-भिन्न वर्गों में अनेकता है, मतभेद है, भिन्न-भिन्न वर्गों में भाईचारा और आपसी मेलमिलाप स्थापित करने की आवश्यकता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय तथा अन्य ऐसे संस्थानों की सराहना करते हुए कहा कि आध्यात्मिक शिक्षा मानव की चेतना को उभार सकती है। दूसरों के मत के लिये 'आदर और सहनशीलता' यह हमारे मनसा तक होना चाहिए।

इससे पूर्व ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि तथा दादी जानकी जी को दिल्ली नगर निगम की ओर से दिल्ली की उप-महापौर बहन अंजना कंवर ने नागरिक अभिनंदन किया।

फिलिपीन के उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी, श्री नटराजन, न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय तथा भ्राता कृष्णा अय्यर, पूर्व न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय ने विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की।

दादी जानकी जी ने कहा कि केवल राजयोग द्वारा ही नकारात्मक विचारों से छुटकारा पाया जा सकता है। भ्राता जगदीश चंद्र जी, ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्य प्रवक्ता ने कहा कि विश्व की समस्त समस्याओं का मूल कारण काम, क्रोधादि विकार हैं। इन विकारों को समाप्त करना तथा स्वर्ण युग लाना इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का लक्ष्य है।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि स्वर्ण युग शीघ्र ही विश्व में आएगा। उसके लिये हमें एकता और लगन रखनी होगी, हमें हिंसा का रास्ता छोड़ना होगा।

चारों महासम्मेलनों की कुछ उपलब्धियां

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंति के समापन समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित चारों महासम्मेलन गत मास सम्पन्न हुए। उनमें से पहले महासम्मेलन का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति जैल सिंह जी द्वारा प्रसिद्ध इंदिरा गांधी स्टेडियम में ६ फरवरी को हुआ। उक्त अवसर पर १२,००० से अधिक श्रोतागण, जिनमें अधिक संख्या में बुद्धिजीवी और विशिष्ट व्यक्ति थे, ने इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका द्वारा आने वाले सतयुग के शीघ्र आगमन का शुभ संदेश सुना। इस स्मरणीय अवसर पर देहली की उपमहापौर द्वारा इस संस्थान की मुख्य प्रशासिका एवं अतिरिक्त प्रशासिका का भव्य नागरिक अभिनंदन हुआ। और एक कार्यकारी पार्षद, राष्ट्रीय स्तर के एक दैनिक पत्र के मुख्य सम्पादक, एक धार्मिक संस्था के प्रतिनिधि, एक देश के राजदूत, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के एक वर्तमान और एक भूतपूर्व न्यायाधीश और एक मुख्य उद्योग के प्रतिनिधि तथा विदेश की एक विशिष्ट महिला—फिलिपिन के उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी ने इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के उद्देश्यों और कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। संचार साधनों ने इस कार्यक्रम को प्रसारित अथवा प्रकाशित किया। प्रसिद्ध गायक अनूप जलोटा ने आध्यात्मिक गीतों से जन-जन को हर्षित एवं आलोकित किया।

इसके शीघ्र पश्चात् माउंट आबू में जो विश्व शांति महासम्मेलन हुआ, उसका उद्घाटन १० फरवरी को गुजरात के राज्यपाल द्वारा हुआ। उसमें अपनी प्रकार का एक पहला दस्तावेज (Document) अपनाया गया। इस दस्तावेज में विश्व में जो अनेक प्रकार के संघर्ष अथवा समस्याएं हैं, उनका मूल मनुष्य के मन में होने वाले अनेक प्रकार के संग्रामों और द्वंद्वों को बताया गया। और वर्तमान काल के विश्वव्यापी संकटों के निराकरण के लिए सुझाव दिये गए तथा उन सुझावों के क्रियान्वयन के लिए एक योजना प्रस्तावित की गई। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ के क्रियान्वन सचिव (Executive Secretary) भ्राता औस्ट्रोस्की ने न केवल इस मसविदे अथवा प्रस्ताव का समर्थन किया बल्कि उसे सम्मेलन की ओर से संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव को पेश करने का कार्य भी अपने जिम्मे लिया। पुनश्च, अन्य विशिष्ट लोगों के साथ उन्होंने भी इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कार्य की सराहना की और कहा कि ब्रह्माकुमारीयां शांति की दिव्य दूत हैं।

इस सम्मेलन के शीघ्र ही बाद माउंट आबू में राजस्थानी सम्मेलन का उद्घाटन हुआ जिसमें कि भारतवर्ष के कोने-कोने से आकर राजस्थानी लोगों ने भाग लिया। इसमें भूतपूर्व उदयपुर राज्य के महाराणा (जिनके दादा जी के साथ दादा लेखराज के घनिष्ठ सम्बन्ध थे), मोदी उद्योग संगठन के अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश की विधान सभा के अध्यक्ष तथा अन्य गणमान्य राजस्थानी भी सम्मिलित हुए। इनका समाचार आकाशवाणी के जयपुर और जोधपुर केंद्रों से प्रसारित हुआ तथा समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ।

तत्पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री द्वारा हुआ। इस महासम्मेलन में गुजरात प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री, स्वास्थ्य सचिव, विभिन्न प्रदेशों के पदस्थ अथवा भूतपूर्व स्वास्थ्य निदेशक, चिकित्सा महाविद्यालयों के आचार्य, चिकित्सा शोध संस्थानों के अधिकारी तथा देश और विदेश के डॉक्टर, मनोचिकित्सक और मनोविश्लेषक भी सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसका मूल उद्देश्य राजयोग और सम्पूर्ण स्वास्थ्य (Holistic Health) के सिद्धांतों तथा अभ्यास विधि को जन-मन में स्वीकार कराना था। गुजरात प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री और स्वास्थ्य सचिव ने भी इस प्रस्ताव का समर्थन एवं अनुमोदन किया और इसके कार्यान्वन के लिए आश्वासन दिया।

इस प्रकार ये चारों महासम्मेलन सफल हुए और यह स्वर्ण जयंति वर्ष इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और स्मरणीय वर्ष सिद्ध हुआ जिसमें कि विश्व सेवा का कार्य अपने एक उच्च शिखर तक जा पहुंचा और उससे अनेक उपलब्धियां हुईं। इस वर्ष में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने अपने केंद्रों द्वारा अथवा अन्य संस्थाओं से मिलकर छोटे-बड़े अनगिनत कार्य किये। इनमें से कई कार्यक्रम स्वयं इस संस्थान ने अपने तौर पर किये और अन्य कुछ अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर किये और वो कार्यक्रम सत्तर से भी अधिक देशों में अपनाए गए तथा उनकी प्रतिध्वनि संयुक्त राष्ट्र संघ की

महासभा में भी उठी। इन कार्यक्रमों के माध्यम से इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का सम्पर्क विश्व की चारों दिशाओं में लाखों-करोड़ों लोगों से स्थापित हुआ और इस विधि कई देशों के प्रमुख अथवा प्रधान एवं अति विशिष्ट लोगों से भी सहयोग मिलना शुरू हुआ। फलत: आज इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के पास बहुमूल्य मानवीय शक्ति है और उसके द्वारा आज यह इतनी सेवा करने में सक्षम है जितनी शायद ही अन्य किसी ऐसी और इस आयु वाली संस्था ने विश्व के इतिहास में की होगी।

इस सबका सुमधुर फल यह है कि आज विश्व शांति और मनोपरिवर्तन के कार्य में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की गणना यदि सर्व प्रमुख स्थान पर न भी हो तो प्रथम पंक्ति में तो हैं ही। आज कई लोग इसे एक 'लघु राष्ट्र संघ' की संज्ञा देते हैं और कहते हैं कि विभिन्न देशों, धर्मों एवं नस्लों के लोगों में जितनी एकता इस संस्थान में है, उतनी राष्ट्र संघ में देशों के प्रतिनिधियों के बीच भी नहीं है। अन्य कई कहते हैं कि इस विश्वविद्यालय का प्रधान स्थान जो माउंट आबू में है, वह स्वर्ग का एक सजीव नमूना है और कि वहां का वातावरण इतना दिव्य, स्वच्छ और शांतिप्रद है कि जिसका वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं। वे कहते हैं कि पांडव भवन अथवा ओमशांति भवन के द्वार में प्रवेश करते ही ऐसा महसूस होता है कि एक नये जगत में हम आ गए हैं जहां पवित्रता, प्रेम, शांति और मुस्कुराते चेहरे ही दिखाई देते हैं। यहां की वरिष्ठ बहनों का मातृवत प्रेम मनुष्य को जीतकर उसके मनोपरिवर्तन की क्रिया को सहज कर देता है।

परंतु वरिष्ठ बहनें जन-जन के इन मधुर शब्दों से संतुष्ट नहीं होतीं बल्कि उनको पूर्ण संतोष तब होगा जब विश्व-भर में जन-जन को निकट भविष्य में सतयुग के आगमन का और वर्तमान समय गुप्त रूप में परमपिता परमात्मा द्वारा हो रहे गुप्त कार्य का परिचय मिल जाएगा और जब वे लोगों को परमपिता परमात्मा के उस पावन स्नेह का परिचय दे देंगी जो उन्होंने उससे पाया है। वे इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए अपने कार्य की गति को दिनों-दिन बढ़ाती जा रही हैं और इस बात में विश्वास करने के अनेक प्रमाण उपस्थित हैं कि पूर्ण शांति का नवयुग अर्थात् सतयुग शीघ्र ही आने वाला है। **—जगदीश**

शुभ कामना संदेश

भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने अपनी शुभकामनाएं विश्वशांति सम्मेलन हेतु भेजते हुए लिखा है कि हमारे भारत की आध्यात्मिक शिक्षा इतनी महान है कि इस मार्ग पर चलकर हम अन्याय एवं हिंसा को समाप्त कर सकते हैं । वर्तमान विश्व में जो शोषण एवं तनाव व्याप्त है वह उच्च आध्यात्मिक चेतना के दर्शन द्वारा समाप्त किया जा सकता है।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय विश्वशांति के लिए मानव के आध्यात्मिक नैतिक चरित्र के उत्थान के लिये कार्य कर रहा है। मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं संस्था के स्वर्णिम जयंती महोत्सव के अवसर पर प्रेषित करता हूं।

भारत के उपराष्ट्रपति आर.वेकंटरामन जी:—शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए लिखते हैं कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्वर्णिम जयंती महोत्सव एवं पांचवें विश्वशांति सम्मेलन हेतु मैं सभी प्रतिनिधियों एवं आयोजकों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। वर्तमान समय जबकि समग्र मानवता के सर्वनाश की धमकियां दी जा रही हैं ऐसे समय में हर सम्भव प्रयास करके मानव को सर्वनाश से बचाने की आवश्यकता है। आध्यात्मिक शक्तियां अपने नैतिक बल द्वारा विश्व को विनाश से बचा सकती हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका विश्वशांति का कार्यक्रम निश्चय ही विश्व की शांति की मांग को पूरा करेगा । सम्मेलन की लाभदायक सार्थक सफलता हेतु शुभकामनाएं।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल वाइस एडमिरल आर. व्यास गांधी:—मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय माउंट आबू में विश्वशांति सम्मेलन आयोजित कर रहा है। विश्वशांति हेतु किये जा रहे प्रयासों के लिये आयोजकों एवं प्रतिनिधियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

उड़ीसा के राज्यपाल श्री बी.एन. पाण्डे जी:—मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अपना स्वर्ण जयंती समारोह एवं पांचवा विश्वशांति सम्मेलन ६ तारीख को दिल्ली में एवं पुन: ९ से १२ तारीख तक माउंट आबू में करने जा रहा है। ब्रह्माकुमारी बहनें जो मानव मात्र की सेवा का विशाल कार्य कर रही हैं उसकी सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं हैं।

ग्याना के राष्ट्रपति:—सम्मेलन की सफलता हेतु शुभकामनाएं स्वीकार करें।

ब्रह्माकुमारी बहनें अवश्य ही विश्व में शांति स्थापित करेंगी!

□बहन चन्द्रिका, न्याय एवं शिक्षामंत्री, महाराष्ट्र

माउंट आबू—९ फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पंचम विश्वशांति सम्मेलन ओमशांति भवन के विशाल सभागार में प्रारम्भ हुआ। सायं ५ बजे विश्व के कोने-कोने-से पधारे हज़ारों प्रतिनिधियों ने विश्वपिता परमात्मा शिव के ध्वज के नीचे खड़े होकर विश्वशांति के लिए दृढ़ संकल्प लिया। शिवध्वज का आरोहण करते हुए संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने विश्वशांति के महान कार्य हेतु पधारे हुए प्रतिनिधियों को मुबारकबाद दी। सभी प्रतिनिधि सभागार में उपस्थित हुए और स्वागत समारोह आरंभ हुआ। सभा-मंच किये जा रहे कार्यों में स्वयं भी सहभागी बनने का संकल्प लिया। बहिन चन्द्रिका जी ने नारी शक्ति का विश्लेषण करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी बहिनों का कार्य अवश्य ही विश्व में शांति लायेगा। उन्होंने कहा कि एक वर्ष पहले मैं माउंट आबू में ब्रह्माकुमारी आश्रम के बारे में अनेकों प्रश्न लेकर आयी थी, मैंने गहराई से बहिनों के सानिध्य में रहकर इनके हर क्रिया-कलापों को देखा, परखा, समझा और श्रद्धापूर्वक अनुभव किया कि **ये बहिनें त्याग, तपस्या, सेवा एवं प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। इनकी कथनी करनी एक है। अतः निश्चय ही ये बहिनें विश्व में शांति लाकर रहेंगी।**

माउंट आबू: स्वर्ण जयंति समापन समारोह के शुभारंभ से पूर्व शिव-ध्वजारोहण दृश्य।

पर ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के साथ श्री आदि चुनचनगिरि मठ के पीठाधीश जगदगुरु स्वामी बालगंगाधर स्वामी, पोरबंदर गुजरात की आर्यकन्या गुरुकुल की प्रमुख बहिन कुमारी सविता बेन एम. मेहता, महाराष्ट्र सरकार की विधि न्याय एवं शिक्षा मंत्री बहिन चन्द्रिका, धारवाड़ (कर्नाटक) के कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. जे.वी. गौड, सभागाध्यक्ष राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्रह्माकुमारी मोहिनी जी उपस्थित थे। स्वामी बालगंगाधर जी ने ब्रह्माकुमारी बहिनों के विश्वशांति के लिये इसी प्रकार के विचार कु. सविता मेहता बहिन ने प्रकट किये। गुजरात हाईकोर्ट के जस्टिस अब्दुल सत्तार कुरैशी ने सभी प्रतिनिधियों, वक्ताओं को धन्यवाद दिया। दादी प्रकाशमणि जी ने सम्मेलन में पधारे विश्वभर के प्रतिष्ठित जनों को पुष्प प्रदान करके हार्दिक स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी आशा बहिन ने किया। संगीत संध्या में ललित सोढ़ा एवं अन्य साथियों ने राजयोग से संबंधित शांति प्रदायक गीत गाये। छोटी-छोटी बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत नृत्यगान से सारी सभा भावविभोर हो उठी। □

गुजरात के राज्यपाल श्री आर.के. त्रिवेदी आठ वर्ष की छोटी बच्ची प्रवीन के अद्भुत प्रवचन को सुनकर उसे शाबाश देते हुए।

विश्वशांति एवं विश्व बन्धुत्व के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों का कार्य अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है

□राम कृष्ण त्रिवेदी

माउंट आबू—१० फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पंचम विश्वशांति महासम्मेलन में बोलते हुए गुजरात के राज्यपाल महामहिम रामकृष्ण त्रिवेदी जी ने कहा कि, विश्वशांति एवं विश्व बन्धुत्व की भावना को बढ़ाने में ब्रह्माकुमारी बहिनों का सक्रिय सहयोग सर्वोपरि एवं सराहनीय है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विगत चार शांति सम्मेलनों का विश्वशांति की दिशा में सकारात्मक प्रभाव रहा है। विश्वशांति घोषणा-पत्र, विश्वशांति के लिये १० सूत्रीय कार्यक्रम एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा घोषित शांति वर्ष १९८६ में शांति के लिये ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का कोटिक्षण संग्रह अभियान चला जिसमें ७० देशों के करोड़ों लोगों ने शांत रहने की प्रतिज्ञाएं लीं। सारे विश्व में विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा जो आध्यात्मिक जागृति ब्रह्माकुमारियों द्वारा लायी गयी है, उससे निस्संदेह यह विश्वास होता है कि भारत अवश्य ही सतयुग बनेगा, विश्व का सिरमौर बनेगा।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि एक तरफ तो यह शांति हेतु कार्य चल रहा है तो दूसरी ओर विज्ञान गर्वित लोग अणुयुद्धों द्वारा विश्व के विनाश की तैयारी में लगे हैं। उन्होंने कहा कि आज हर व्यक्ति जानता है कि यदि भूल से युद्ध छिड़ गया तो मानवता का सर्वनाश हो जायेगा। न हारने वाला बचेगा न जीतने वाला। अत: यह खुशी की बात है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विश्व को विनाश से बचाने के लिये विगत ४० वर्ष से सघन प्रयास विभिन्न तरीकों से किये हैं। राज्यपाल त्रिवेदी जी ने यह भी प्रसन्नता व्यक्त की कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय संयुक्त राष्ट्रसंघ का अशासकीय स्थायी परामर्शदाता सदस्य विश्व की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान में संलगन है। यह भारत का गौरव है कि दादी प्रकाशमणि को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने शांति के लिये कार्य करने हेतु शांति पदक प्रदान करके सम्मानित किया है। उन्होंने प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति से विश्वशांति के लिए कार्य करने की अपील की और कहा कि विश्व विनाश के कगार पर खड़ा है। अत: प्रत्येक व्यक्ति जागृत हो जाये, अपने अस्तित्व

पंचम विश्व शान्ति सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर दादी प्रकाशमणि जी उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्बोधित करती हुई।

को बचाने के लिए स्वयं का सुधार करें। विकारों का जीवन छोड़कर नैतिक आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करें! उन्होंने संचार माध्यमों, समाचार-पत्रों, रेडियो आदि से भी अपेक्षा की कि शांति के लिये कार्य करने वालों के सहयोगी बनें, शांति संदेश प्रसारित करें।

संस्था के प्रमुख वक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी ने गंभीर चिंतन के साथ विचार व्यक्त किये कि लोग विश्व में अशांति का कारण विश्व की समस्याओं को मानते हैं । कोई भुखमरी को अशांति का कारण मानता है तो कोई अशिक्षा को, तो कोई हथियारों की दौड़ को अशांति का कारण मानता है जबकि वास्तविकता यह नहीं है । अशांति का मूल कारण कुछ और ही है, वह है मनुष्य के मन की विकृति । उन्होंने कहा कि अमेरिका में इतना अन्न पैदा होता है कि यदि वह विश्व के अन्य देशों में भेज दे तो भूखे लोग बच जावें। परंतु दया, क्षमा, करूणा के अभाव में वे लोग स्वार्थी हैं । तो आवश्यकता यही है कि मनुष्य की काम, क्रोध, लोभ, मोह की विकृति दूर हो जाये तो वह मानवीय मूल्य स्थापित किये जायें। नयी सृष्टि की रचना हेतु नये मूल्यों को अपनाना होगा, पुराने विकृत मूल्यों को, पूर्वाग्रहों को छोड़ना होगा ।

ग्याना के भारत स्थित उच्चायुक्त महामहिम स्टीव नारायण जी ने कहा कि संसार में परिवर्तन बड़ी तेज़ी-से हो रहा है परंतु वह परिवर्तन जो ईश्वर चाहता है उसे अभी ही करना पड़ेगा । घृणा को प्रेम, क्रोध को शांति से जीतना पड़ेगा ।

यूनाईटेड किंगडम लंदन के लार्ड एनल्स ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "संसार में शांति तब तक स्थापित नहीं हो सकती जब तक स्त्री एवं पुरुष दोनों ही भय से मुक्त न हो जायें । भय अशांति का कारण सकारात्मक कर्मों एवं अहिंसा पालन करने से विश्वशांति संभव है। ब्रह्माकुमारी बहिनों का राजयोग द्वारा इस क्षेत्र में किया जा रहा कार्य अनुकरणीय है।

राष्ट्रसंघ के 'एक्जीक्यूटिव सेक्रेटी' भ्राता डॉ. ओस्ट्रोवसकी, राष्ट्रसंघ की ओर से दादी प्रकाशमणि जी को पीस मैडल प्रदान करते हुए।

गुजरात के राज्यपाल को दादी प्रकाशमणि जी ईश्वरीय सौगात देते हुए।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के एक्जीक्यूटिव सेक्रेटरी मि. औस्ट्रोस्की ने कहा कि मैं इस सम्मेलन में कुछ सीखने आया हूं, आध्यात्मिक प्रेम एवं शांति का पाठ सीखने आया हूं । उन्होंने बताया कि हमारे सेक्रेटरी जनरल ने इस सम्मेलन में आना था परंतु व्यस्तता के कारण नहीं आ सके । उनका संदेश मि. औस्ट्रोस्की ने पढ़कर सुनाया एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा विश्वशांति के कार्यों के लिए दादी प्रकाशमणि जी को एक शांति-पदक प्रदान किया । फिलीपाइन्स के उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी बहिन सीलिया डायज़ लारेज ने अपने जीवन के उन क्षणों का जिक्र किया जब उनके पुत्र पर आपत्ति आ गयी और उस दुर्घटना ने उन्हें ईश्वर की तरफ उन्मुक्त किया । बहिन सीलिया ने राजयोग ब्रह्माकुमारी बहिनों से सीखा है उन्होंने शांति के लिए कोटिक्षण संग्रह अभियान में भी सक्रिय सहयोग किया, उन्होंने बताया कि प्रेम के द्वारा हम किसी के हिंसा-भाव को बदल सकते हैं । अंत में मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभा को मंत्रमुग्ध करते हुए कहा कि इस शांति हाल में बैठे सभी भाई-बहिनें यह दृढ़ संकल्प कर लें कि ५०० करोड़ आत्माओं को शांति का संदेश देंगे तो शीघ्र ही शांति का संसार बन जायेगा । दादी जी ने बताया कि प्रत्येक मनुष्यात्मा में ५ विकार हैं जो उसे दुखी और अशांत करते रहते हैं । कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमार रमेश शाह ने किया । □

शांति की ईश्वरीय शक्ति से ही विश्व में शांति होगी

□ब्रह्माकुमारी सुदेश लन्दन

माउंट आबू—१० फरवरी—ओमशांति भवन के खुले अधिवेशन में अपने योग प्रेरित विचार व्यक्त करते हुए लन्दन सेवाकेंद्र की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी सुदेश ने कहा कि प्रेम एवं शांति की शक्ति आंखों से नहीं देखी जा सकती मगर इन्हें जीवन में अनुभव किया जा सकता है । शांति एवं प्रेम की यात्रा का अर्थ है कि हम यात्री की तरह इस पथ पर अनेक कठिनाइयों को पार करते हुए अपने लक्ष्य की तरफ सहज रूप से बढ़ सकते हैं । इस रूहानी यात्रा में एक बात याद रखना आवश्यक है कि मैं एक पवित्र एवं शक्तिशाली आत्मा हूं और इस यात्रा का मार्गदर्शक सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा है। और उसके साहचर्य से ही व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिक गुणों का समावेश हो सकता है और निस्वार्थ रूप से अन्य मनुष्यात्माओं को भी लाभांवित कर सकता है । ईश्वरीय शक्ति से स्व में एवं विश्व में शांति होगी ।

ग्याना के उच्चायुक्त स्टीव नारायण जी ने कहा कि ''जिस समय मैंने ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त किया, उस समय मैं ग्याना देश का प्रमुख राजनीतिज्ञ था, दो ब्रह्माकुमारी बहिनों द्वारा मुझे राजयोग की शिक्षा प्राप्त हुई, मैंने दृढ़ता एवं नियमपूर्वक राजयोग का अभ्यास किया और मेरे जीवन में अपूर्व सुख, शांति, पवित्रता आई । मैंने अपने गुयाना देश के राष्ट्रपति को भी तनावपूर्ण क्षणों में राजयोग की शक्ति से समस्याओं के समाधान का तरीका सिखाया वह भी लाभांवित हुये । मेरे देश में राजयोग का खूब प्रचार-प्रसार है । नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. एम.ए. चान्सरकर ने अपने विचार व्यक्त किये कि रूहानी यात्रा में लोग यह भूल जाते हैं कि जैसे कि यदि गाड़ी में बैठा यात्री अपने सामान को अपने सिर पर ही रखे रहता है और बोझ से परेशान रहता है वैसे ही जब व्यक्ति को यह निश्चय हो गया कि मेरा रक्षक माता-पिता परमात्मा है फिर भी वह अपनी परेशानियां, दुखों के बोझ को उस पिता की याद से हल्का करने की बजाए स्वयं ही संघर्ष करता रहे तो निश्चय ही उसे सुख-शांति की अनुभूति नहीं होगी । उन्होंने कहा कि ऊंची प्राप्ति के लिये छोटी-छोटी बातों को छोड़ना पड़ेगा । संसार की कृत्रिम उपलब्धियों से मुक्त होना पड़ेगा । तभी ईश्वर प्रदत्त श्रेष्ठ जीवन होगा । अहिंसा का विश्लेषण करते हुए उन्होंने बताया कि जब हम किसी को दूसरा समझते हैं तो उससे हमारे मन में पृथकतावादी भाव पैदा होता है और यही सबसे बड़ी हिंसा है जिसके कारण भ्रातृत्व भाव नहीं आ पाता है।

ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी, निदेशिका दिल्ली जोन ने अपने प्रवचन में कहा कि आज का विषय केवल सुनने का नहीं वरन् अनुभव करने का है। आध्यात्मिक शक्ति के बिना मानव दानव बन गया है। आध्यात्मिक शक्ति कोई मनुष्य नहीं दे सकता, यह शक्ति देने वाला स्वयं परमपिता परमात्मा है जो वर्तमान समय यह शक्ति दे रहा है । सर्वप्रथम स्वयं को बिंदुस्वरूप आत्मा निश्चय करो तब ही बिंदुस्वरूप परमात्मा की स्मृति में रह सकते हैं । परमात्मा से आत्मिक संबंध जोड़ने से ही परमात्मा की सर्वशक्तियां आत्मा में आने लगती हैं । शर्त यही है कि शरीर रूपी रबड़ को उतारने के बाद ही ईश्वरीय पावर (करेंट) आयेगी । जीवन में शांति आयेगी, विश्व में शांति आयेगी । अब जबकि स्वयं भगवान सृष्टि पर आये हैं तो समय का इन्तज़ार नहीं करना है । रहमदिल बाप भक्ति का फल दे रहे हैं । अत: द्वापर की बातें न करके भक्ति का फल-ज्ञान, बाप से लेना है। समय को पहिचानो, स्वयं को पहिचानो एवं संयम को धारण करो यही पिता की पहचान है। □

माउंट आबू: प्रसिद्ध संगीतकार भ्राता ओमव्यास जी तथा उनके सहयोगी प्रतिनिधियों का अपने गीतों से मन मोहते हुए।

शिक्षाविद् एवं युवा कार्यशाला

माउंट आबू—१० फरवरी—पंचम विश्वशांति सम्मेलन के अवसर पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ज्ञान-विज्ञान भवन में आयोजित शिक्षाविदों एवं युवाओं की कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते राजा बलवंत सिंह कॉलेज, आगरा के प्रोफेसर डॉ. हरमोहन सिंह जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चा अपने जन्म के साथ पुराने जन्म के संस्कार लाता है । उन संस्कारों को वह अपनी मां की गोद में प्रेम एवं वात्सल्य के रूप में प्रगट करता है । इसके बाद ज्ञान इंद्रियों के द्वारा वह अपने संस्कारों को प्रगट करने लगता है । उसका पहला शिक्षक मां बनती है । दूसरा शिक्षक थोड़ा बड़ा होने पर परिवार बनता है एवं बाद में जब स्कूल जाने लगता है तब उसका शिक्षक शिक्षक बनता है । यदि ये तीनों शिक्षक बच्चे के शिक्षण की सही जिम्मेवारी नहीं निभाते तो बालक असामाजिक तत्वों के हाथों में पहुंचकर उनसे गलत शिक्षण लेकर बिगड़ जाता है । प्रो. सिंह ने कहा कि आज का शिक्षक बालक को कुछ सिखाने, बनाने के लिये नहीं पढ़ाता वरन् धनार्जन करने का आधार मानकर शिक्षा देता है । माता-पिता एवं परिवार भी अपने बच्चे पर पूरा ध्यान नहीं देते अतः इन सबका कारण बनता है बालक का बुरा आचरण । अतः आज के विद्यार्थी का कोई दोष नहीं है, वरन् उसको शिक्षा देने वालों का दोष है । माता-पिता विकारों के वशीभूत हैं तो बच्चों को क्या आदर्श देंगे । अतः पहले माता-पिता को राजयोग की शिक्षा से अपने जीवन को आदर्श बनाना होगा तब ही बालक का शिक्षण सही होगा, चरित्र ऊंचा होगा । श्री सिंह ने इस क्षेत्र में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सराहना की जहां पर सपरिवार राजयोग का शिक्षण देकर आदर्श माता-पिता एवं बालक-बालिकाएं तैयार हो रहे हैं ।

ऑस्ट्रेलिया के मि. रोविन ने अपने विचार व्यक्त किये कि आध्यात्मिक शिक्षा ही सर्वोत्तम है । जब यह पता चल गया कि इस शरीर में बैठी आत्मा ही सब-कुछ करती है तो आत्म-स्वरूप की स्थिति में रहकर विकारों से निवृत्ति होती है, चरित्र का उत्थान होता है।

एम.ए. चान्सारकर उपकुलपति नागपुर विश्वविद्यालय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षक एवं विद्यार्थियों की समस्या केवल एक फार्मूले से समाप्त हो सकती है कि शिक्षक निष्ठापूर्वक शिक्षा देने की प्रतिज्ञा लें एवं विद्यार्थी निष्ठापूर्वक सीखने की प्रतिज्ञा लें । छात्र प्रश्न पूछता है तो

माउंट आबू: ५वें विश्वशांति महासम्मेलन के अंतर्गत हुई 'एडमिनिस्ट्रेटर तथा एक्जीक्यूटिव' वर्कशाप का दृश्य।

माउंट आबू: विश्वशांति महासम्मेलन के अंतर्गत हुई साइंटिस्ट्स तथा इंजीनियर्स वर्कशाप कार्यरत है।

जिज्ञासा कही जाती है, शिक्षक प्रश्न पूछता है तो परीक्षा कही जाती है, दोनों को चुनौतियों का सामना करना है।

पाटन कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. हरीश शुक्ला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "आध्यात्मिक जगत एवं भौतिक जगत के बीच में जीवन बह रहा है। आज की शिक्षा हमारा परिचय बाहय भौतिक जगत से कराती है लेकिन मैं शरीर से भिन्न चेतन सत्ता आत्मा हूं यह ज्ञान वर्तमान शिक्षा नहीं देती है। प्रेम, उल्लास एवं शांति के वातावरण में ही बालक सीखता है। आत्मिक ज्ञान एवं नैतिक शिक्षा से ही विश्व-बंधुत्व की भावना का विकास होगा। डॉ. शुक्ला ने कहा कि इस क्षेत्र में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक महान आदर्श है। इसमें राजयोग सीखने वाले विद्यार्थी अपनी भौतिक शिक्षा में भी अति उत्तम रहते हैं। इसके प्रसारण से शिक्षा की समस्या का समाधान होगा।

आर्यकन्या गुरुकुल की अधीक्षका कुमारी सविता बहिन मेहता ने कहा कि विद्या एवं अविद्या को जान लेना ही वास्तविकता है। विद्या वह है जो मोक्ष प्रदान करे। आर.बी. शुक्ला कुलपति सौराष्ट्र विश्वविद्यालय ने अपने छात्रों को राजयोग सिखाने की प्रतिज्ञा की।

सभाध्यक्ष नकुल पाटिल ने कहा कि शिक्षा पद्धति के आधार पर ही समाज का निर्माण होता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने आदर्श शिक्षा पद्धति तैयार की है। उस पद्धति को यदि विश्व की सभी सरकारें मान लें, विश्व में नये विश्व का निर्माण होगा। □

माउंट आबू: विश्वशांति महासम्मेलन के अंतर्गत हुई 'बिजनेसमैन तथा इंडस्ट्रियलस्ट्स' वर्कशाप का दृश्य।

मानवता के नवनिर्माण में एवं विश्वशांति में मेरे व्यवसाय का क्या योगदान हो सकता है ?

माउंट आबू: पाण्डव भवन में गुजरात के राज्यपाल प्राता त्रिवेदी जी के पधारने पर स्वागत करती हुई दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य।

माउंट आबू—११ फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पंचम विश्वशांति सम्मेलन में विभिन्न वर्गों एवं व्यवसायों से संबंधित व्यक्तियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका व्यवसाय मानवता के कल्याण एवं विश्वशांति के कार्य में कहां तक योगदान दे सकता है । अपने विचार व्यक्त करते हुए बी.के. चार्ले ने कहा कि अपने स्वयं के जीवन में परिवर्तन लाकर ही अपने व्यवसाय का प्रभाव समाज पर डाला जा सकता है । खेद की बात है कि वर्तमान समय कर्म में अंतर आ गया है । यदि कर्म योगयुक्त हों तो जीवन में काफी लाभ हो सकता है । उन्होंने कहा कि मैंने अपने पारिवारिक जीवन एवं व्यवसायिक जीवन में आध्यात्मिक क्रांति लाने की प्रेरणा प्रजापिता ब्रह्मा बाबा से ली । कर्मयोगी जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है । अहमदाबाद के फिजीकल रिसर्च लेबोरेट्री के निदेशक एस.पी. पांडया जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि वर्तमान समय में अनेक उलझनें मानव जीवन को परेशान करती हैं । एक सवाल जो मेरे मन में सदैव उठता था कि मैं वैज्ञानिक होने के नाते इस समाज की क्या सेवा कर सकता हूं ? मैंने गहराई से आत्म-चिंतन करके निष्कर्ष निकाला कि मन एवं पदार्थ में क्या अंतर है और इनका सामंजस्य कैसे किया जा सकता है ? उन्होंने कहा कि जहां विज्ञान ने मानव को अनेक वरदान दिये हैं वहां मानव के अंतर्जगत में अज्ञान का अंधेरा होने से मानव, मन की शांति से वंचित हो गया है । इसलिए आज ज्ञान एवं विज्ञान अर्थात् आध्यात्म एवं विज्ञान का समन्वय करना है तब ही विश्व में शांति होगी । मानवता शून्य विज्ञान अभिषाप है । मानवता आध्यात्मिक ज्ञान से आती है।

इस अवसर पर जालंधर से पधारी केवल ९ वर्ष की छोटी-सी बालिका ने बहुत ही विवेकयुक्त भाषण करके सारी सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया । यह बालिका कुमारी प्रवीन शर्मा बड़ी समझदारी से बोली कि आज मानव जीवन सबसे सस्ता हो गया है । मनुष्य मीठा खरीद सकता है परंतु जीवन में मिठास नहीं ला सकता है । दया-क्षमा, करूणा से रहित मानव आज जानवरों से भी नीचा जाकर हिंसा करता है । केवल आज ज्ञान एवं राजयोग से ही जीवन में शांति आ सकती है । कुमारी प्रवीन ने कहा मैं कक्षा तीसरी की छात्रा हूं, रोजाना राजयोग की शिक्षा लेती हूं ।

हिम्मत नगर की ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश कु. पूर्णिमा ने बताया कि आध्यात्मिक शिक्षा मैंने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से ली है । इसका मेरे न्यायाधीश के व्यवसाय में बड़ा ही सहयोग मिल रहा है । उन्होंने कहा कि जब मेरे कोर्ट में जब पत्नी एवं पति के तलाक का झगड़ा आता है और पति कहता है कि मेरी पत्नी मेरे घर आये मेहमानों का स्वागत नहीं करती तो मैं उन्हें न्याय से परे उन्हें नैतिक रूप से समझाकर आपसी समझौता करा देती हूं । धर्म के झगड़ों को मैं आत्मा की अनुभूति कराकर संकुचित विचारधारा को दूर कराके धर्म-भेद, जाति-भेद के झगड़ों को विश्वनाथ शिव का सर्व आत्माओं के पिता के रूप में परिचय देकर उन्हें भाईचारे की शिक्षा देकर हल कर लेती हूं। निश्चय ही न्यायाधीश कानून की पेचीदगी से ऊपर उठकर राजयोग की शिक्षा से आध्यात्मिक तरीके से प्रेमपूर्वक झगड़ों का एवं विवादों का समाधान दे सकता है। इससे समाज एवं विश्व की शांति में अच्छा ही सहयोग मिल सकता है । व्यक्ति की निजी पवित्रता से ही व्यवसाय की पवित्रता आती है । व्यक्ति स्वयं खराब होता है तब ही व्यवसाय को खराब कर देता है । नहीं तो कोई भी व्यवसाय खराब नहीं हो सकता है।

प्यूरिटी पत्रिका के सम्पादक बृजमोहन जी ने इस संदर्भ में कहा कि व्यवसाय कोई भी हो सब अच्छे हैं परंतु व्यवसाय को करते समय हमारी स्थिति कैसी है उस पर ही हमारी मनोवृत्ति आधारित है । वर्तमान समय प्रत्येक व्यवसाय में विकृति आयी है । कानून बना है फिर भी मिलावट होती है, व्यापार में ठगी

होती है । शिक्षा आज रोज़गार बन गयी है । डॉक्टर धन का गुलाम है, पैसे न मिलने पर मरीज़ को मार देता है। गृहणी स्त्री स्वमान के नाम पर स्वछंद होकर अपने पारिवारिक दायित्व को छोड़ रही है । सबसे सस्ता इंसान का जीवन है। सम्पदा आज असभ्यों के हाथों में है। सिद्धांतहीन राजनीति, प्रेम-रहित प्रभुत्व, विवेकशून्य आनंद, मानवता शून्य विज्ञान के कारण ही सब व्यवसायों में विकृति है । इन सबका कारण मानव का विकारी मन है । यह मनोविकृति आत्मा के ज्ञान से दूर होती है । यह ज्ञान स्वयं परमपिता परमात्मा निराकार शिव द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा दिया जा रहा है।

सौराष्ट्र युनिवर्सिटी के उपकुलपति भ्राता आर.बी. शुक्ला ने प्रसन्नतापूर्वक कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने एक छोटे-से समूह को लेकर की थी । उन्हें नैतिक एवं आध्यात्मिक रूप से इतना सम्पन्न बनाया कि आज ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्माकुमारियां भाई-बहिनें भारत ही नहीं वरन् विश्व के हर कोने में आध्यात्मिक शक्ति द्वारा विश्वशांति का सराहनीय कार्य करते सारे विश्व को रोशनी दिखा रहे हैं । उन्होंने वर्तमान शिक्षा पद्धति में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम को शामिल करने की राय ज़ाहिर की। उन्होंने यह भी रहस्योद्घाटन किया कि अहमदाबाद, महाराष्ट्र एवं दिल्ली विश्वविद्यालयों में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का संबंध है जहां नैतिक चारित्रिक विकास हेतु विद्यार्थियों के समक्ष इस राजयोग की शिक्षा के कार्यक्रम रखे जाते हैं । साहित्य पढ़ा जाता है । उन्होंने कहा कि वह घंटी ही नहीं जो बजाई ही न जाये एवं वह प्रेम ही नहीं जो दिया न जाये । उन्होंने ब्रह्माकुमारी बहिनों की प्रेमपूर्ण शिक्षा की सराहना की ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रतिनिधि ब्रह्माकुमारी मोहिनी जी ने भी अपना अनुभव युक्त प्रवचन दिया ।

सभा का संचालन ब्रह्माकुमारी शीलू, माउंट आबू ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन ब्र.कु. करूणा जी ने किया। □

माउंट आबू—११ फरवरी—खुले अधिवेशन में मंच पर (बाएं से) ब्र.कु. बृजमोहन, बहिन पूर्निमा, जिला तथा सत्र न्यायाधीश, ब्र.कु. मोहिनी, न्यूयार्क, प्रो. आर.बी. शुक्ला उपकुलपति सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, प्रो. एस. पाण्डया, निदेश फीजिकल रिसर्च लेबोरेटी, अहमदाबाद तथा ब्र.कु. मीरा उपस्थित हैं।

(पृष्ठ २५ का शेष)

स्वर्णिम युग की स्थापना

सुनना पड़ेगा, सीखना पड़ेगा । वह परमपिता परमात्मा शिव स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा तन में प्रवेश करके प्राय: लोप गीता ज्ञान एवं योग सिखा रहे हैं, सतयुग की स्थापना कर रहे हैं । जिनका गायन वर्णन शास्त्रों में पढ़ते-सुनते आये हैं, ये वही परमात्मा शिव एवं प्रजापिता ब्रह्मा हैं जो पवित्रता सुख-शांति का वरदान २१ जन्मों के लिये दे रहे हैं ।

सभा की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहिनी जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आपने बहुत ही अच्छी-अच्छी बातें सुनीं, उनका सार तीन शब्दों में याद रखो। एक तो आप यह न भूलना कि मैं कौन हूं। आपको उत्तर मिला है कि आप शरीर नहीं आत्मा हैं । सर्वशक्तिवान परमात्मा की सर्वशक्तिवान आत्मा हो । दूसरी बात अपने प्यारे पिता परमात्मा शिव को नहीं भूलना, उनका सच्चा परिचय आपको यहां मिला उस परमपिता परमात्मा से कनेक्शन रखने से जीवन में रोशनी रहेगी । तीसरी बात याद रखो कि वर्तमान समय कौन-सा चल रहा है,यह समय अंत का है,विनाश अवश्य होगा और उसके बाद स्वर्णिम युग सतयुग अवश्य आयेगा। यह ईश्वरीय योजना है,एक तरफ कलियुग विनाश की तैयारी पूर्ण है। तो दूसरी तरफ सतयुग का कार्य अवश्य पूरा होगा । यह सब हमने साक्षात्कार में देखा है अब आप सब-कुछ आंखों से देख रहे हैं । पिताश्री बापदादा के सभी महावाक्य सत्य सिद्ध हो रहे हैं ।

विश्व में आपसी तनाव एवं लड़ाई-झगड़े समाप्त करके सद्भावना एवं शांति लाने हेतु पांचवें विश्वशांति सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित

माउंट आबू—११ फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्वशांति सम्मेलन में विश्व के ५५ देशों से पधारे प्रतिनिधियों ने सर्व-सम्मति से शांति के लिए उस घोषणा-पत्र को पारित कर दिया जो संस्था के प्रमुख वक्ता महान विचारक राजयोगी शांतिदूत भ्राता ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी ने सभा के समक्ष प्रस्तुत किया । इस घोषणा-पत्र के अनुसार विश्व के सभी लोगों को शांति प्राप्ति की इच्छा है और यह इच्छा प्रत्येक राष्ट्र, धर्म, जाति एवं सम्प्रदाय की ज्वलंत समस्या है क्योंकि इसके साथ मानवता को सर्वनाश से बचाने का प्रश्न जुड़ा हुआ है। इसके मुख्य सूत्र इस प्रकार है कि:—

१. विश्वशांति की स्थापना आपसी प्रेम एवं सद्भावना से होगी, घृणा एवं द्वन्द्व से नहीं। ये द्वन्द्व व्यक्ति के अपने आंतरिक द्वन्द्व भी हो सकते हैं एवं बाहय वातावरण से प्राप्त द्वन्द्व भी हो सकते हैं । इन द्वन्द्वों का एक कारण यह भी हो सकता है कि जब व्यक्ति की आशाओं एवं प्राप्ति में अंतर हो जाता है या उसे वांछित लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता नहीं मिलती है तो व्यक्ति निराश एवं हतोत्साहित होकर असंतुष्ट एवं नाराज़गी का अनुभव करता है।इसका कारण व्यक्ति को अपनी पूरी पहिचान न होने के कारण तथा विश्व ड्रामा में उसका क्या कर्तव्य है तथा दूसरी आत्माओं से उसका क्या संबंध है इसका ज्ञान न होने के कारण अधिकार एवं कर्तव्यों की विस्मृति से मन द्वन्द्व ग्रस्त एवं अशांत हो जाता है।वह अशांत व्यक्ति अंतर्द्वन्द्व का प्रदर्शन दूसरों को अशांत करके करता है।

२. हमारा यह विश्वास है कि संतुष्टता, सहनशीलता, नम्रता, मधुरता, आत्मविश्वास, स्वाभिमान, दृढ़ता एवं सद्व्यवहार आदि सद्गुणों को अपनाकर व्यक्ति अंतर्द्वन्द्वों से मुक्त होकर शांति एवं सद्भावना पैदा कर सकता है। इसके विपरीत असंतुष्टता, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, घृणा, भय आदि विकारों से अशांति फैलती है।

३. बुद्धि का संतुलन, सद्भावना, एवं ज्ञान-शक्ति से विरोधी स्वभाव पर नियंत्रण पाने के लिये राजयोग का अभ्यास एवं नियमों की पालना आवश्यक है।

४. बाहय द्वन्द्व एक देश का दूसरे देश के साथ या एक धर्म का दूसरे धर्म के साथ, या जातिभेद, भाषाभेद या सामाजिक आर्थिक विषमता से पैदा होते हैं । इन बाहय द्वन्द्वों को समाप्त किया जा सकता है यदि हम निम्नलिखित साधनों को अपने जीवन में अपना लें।

१. एक-दूसरे की भावनाओं व विचारों को समझकर हम आपसी विचार-विमर्श से समस्याओं का समाधान करेंगे।

२. सभी के प्रति शुभ-भावना एवं शुभ-कामना रखते हुए आपसी शंका, घृणा, ईर्ष्या-द्वेष की भावना नहीं रखेंगे और न दूसरों के कार्यों में बाधा डालेंगे, न दूसरों को बदनाम करने या हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे ।

३. नम्रता, सहनशीलता, सहयोग एवं धैर्यता आदि सद्गुणों को अपनाकर स्नेह, सहयोग से यह धारणा पक्की करेंगे कि विश्व में हरेक को रहने एवं जीने का अधिकार है, सारा विश्व हमारा परिवार है।

४. हम ऐसे व्यक्ति या संस्था से कोई संबंध नहीं रखेंगे जो अलगाववाद या मनमुटाव पैदा करने वाले हैं तथा हिंसा एवं अशांति को बढ़ाते हैं । इसके विपरीत हम संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा ऐसी ही उन सभी संस्थाओं को जो आपसी प्रेम, भ्रातृत्व एवं सद्भावना व सहयोग द्वारा समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान में तत्पर हैं उन्हें अपना पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

इस घोषणा-पत्र में एक आगामी कार्य योजना भी प्रस्तुत की गयी है जिसमें से एक प्रेरणादायी योजना है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के द्वारा १५ सितम्बर को विश्वभर में एक मिनिट शांति में रहने की योजना । उपस्थित लोगों से तथा सर्व ब्र.कु. भाई-बहनों से १५ सितम्बर, १९८७ को एक मिनिट शांति में रहकर विश्व म॰ शांति की तरंगें फैलाने के कार्य को स्वीकार किया गया । दूसरी योजना है कि—हम अपने जीवन में आध्यात्मिक शिक्षा एवं राजयोग के अभ्यास को महत्व देंगे जिससे हमारे जीवन में दिव्यगुणों की धारणा एवं आचरण की श्रेष्ठता होगी और जीवन

में महानता का समावेश होगा तथा अशुद्ध आचरण, बुरी आदतें अथवा सांसारिक विवेक शून्य आनंद देने वाले भौतिक एश्वर्ययुक्त बातों एवं वस्तुओं का परित्याग करेंगे । सादा एवं उच्च विचार का जीवन रखेंगे । इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु हम विभिन्न स्थानों पर ऐसे सम्मेलन, गोष्ठियां, स्नेह-मिलन, वीडियो तथा प्रोजेक्टर स्लाइड-शो, राजयोग शिविरों व अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे तथा पत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य संचार माध्यमों का सहयोग लेकर अधिक-से-अधिक लोगों में जागृति लायेंगे । और सभी वर्ग के लोगों को नैतिक व मानवीय मूल्यों को जीवन व व्यवहार में अपनाने के लिये प्रेरित करेंगे । एवं दृढ़ विश्वास के साथ प्रतिज्ञा करते हैं कि आपस में संगठित होकर नयी सतयुगी सृष्टि की स्थापना करेंगे जहां पर आपसी स्नेह, भाईचारा, न्याय,सच्चाई व निष्पक्षता का व्यवहार होगा । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार एवं घृणा को हम विश्व-से समाप्त करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं ।

उपरोक्त प्रस्ताव का समर्थन ग्याना के भारत स्थित उच्च-आयुक्त महामहिम स्टीव नारायण जी, फिलिपीन्स देश के उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी प्रमुख जननेत्री सीलिया डायज लारेज़, यूनाईटेड किंगडम लंदन के प्रमुख गांधीवादी लार्ड एनल्स एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ के एक्जीक्यूटिव सेक्रेटरी मि. औस्ट्रोस्की ने किया । मि. औस्ट्रोस्की ने इस घोषणा-पत्र को संयुक्त राष्ट्रसंघ की होने वाली मीटिंग के एजेण्डा में सम्मिलित करके इसे सारे सदस्य देशों द्वारा स्वीकृत कराने की घोषणा सभा के समक्ष की । इस प्रस्ताव का अनुमोदन सभा में उपस्थित पचपन देशों के हज़ारों प्रतिनिधियों ने ताली बजाकर किया ।

इस सभा की अध्यक्षता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी निर्मल शांता जी ने की । संचालन बम्बई की राजयोग टीचर ब्रह्माकुमारी उषा बहिन ने किया तथा ब्रह्माकुमार मृत्युंजय ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। □

पौष्टिक आहार–सम्पूर्ण स्वास्थ्य

उपर्युक्त विषय पर कार्यशाला में चर्चा के बाद चिकित्सा विशेषज्ञों ने सर्वसम्मति से मत व्यक्त किया कि शाकाहारी भोजन में सभी पौष्टिक तत्व विटामिन हैं।

टेक्सास की स्कूल ऑफ सीटोटेक्नोलोजी की निदेशिका डॉ. हंसा रावल ने अध्यक्षीय सारांश में वैज्ञानिक-आध्यात्मिक सिद्धांत अहिंसा पर आधारित भोजन का महत्व बताते हुए कहा कि १९६७ में विश्व वैज्ञानिक मानव स्रोत कमेटी द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में शाकाहारी आहार को सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपयोगी बताया गया। उन्होंने महात्मा गांधी का उदाहरण देते हुए कहा कि वे लगातार ६ महीनों तक सिर्फ फलाहार करके भी संपूर्ण स्वस्थ रहे थे, जिससे सिद्ध होता है कि फलों में सभी पौष्टिक तत्व विद्यमान हैं।

डॉ. कारोल इल्डर बीर्नबाम ने सभी का ध्यान शुद्ध भोजन की ओर खींचा तथा महाराष्ट्र की भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री डॉ. श्रीमती ललिता राव ने पौष्टिक आहार के अभाव में होनेवाले रोगों पर प्रकाश डाला।

मद्रास के सर्जन, डॉ. वी.के. आनंदन ने "प्रेम से भोजन पकाओ" का नारा देते हुए पकाने, परोसने और खाने के वक्त की मानसिक स्थिति का स्वास्थ्य पर प्रभाव का वर्णन किया। अंत में तमिलनाडु जोन की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी रोजी बहन ने निष्कर्ष में ईश्वरीय संदेश देते हुए कहा कि शाकाहारी भोजन द्वारा सदा स्वस्थ्य रहा जा सकता है।

साइकोडाइनामिक्स ऑफ पोजीटिव हेल्थ

उपर्युक्त विषय पर कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन के मुख्य संयोजक, ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी ने सम्पूर्ण स्वास्थ्य के अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के पहलुओं पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

यूनाइटेड किंगडम के डॉ. प्रशांत वी. काकोडे ने व्यक्ति की मानसिकता तथा धारणाओं का वाइरस बीमारियों से सम्बंध पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भावनात्मक उद्वेग विभिन्न व्यक्तियों पर एक समान प्रभाव नहीं डालते। उन्होंने कहा कि जैसे पेप्टिक अल्सर से पीड़ित व्यक्ति बदले की भावनाओं से भरा रहता है, वर्तमान और भूतकाल की स्मृतियों और परिस्थितियों द्वारा उसकी वह प्रवृत्ति बढ़ती है। लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त व्यक्ति की भावनाएं दूसरों के प्रति कल्याण वृत्ति में बदल जाती है। बम्बई के मनोचिकित्सक डॉ. मनिलाल गाड़ा ने बाल-मनोविज्ञान के तत्वों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उम्र बढ़ने के साथ बच्चों पर माता-पिता के मानसिक तनाव की प्रतिक्रिया पड़ती है। उन्होंने बालक के सम्पूर्ण स्वस्थ्य विकास के लिए स्नेह और प्यार, पर्याप्त स्वतंत्रता, प्रशंसा द्वारा उत्साह बढ़ाना, खेलने के अवसर प्रदान करने और अनुशासन बनाये रखने की आवश्यकता पर बल दिया।

राजस्थानी सम्मेलन का स्वागत समारोह

माउंट आबू—१२ फरवरी—विश्वशांति सम्मेलन के उपरांत प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के विशाल ओमशांति भवन में अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन का शुभारम्भ विश्वभर से पधारे प्रतिनिधियों के स्वागत समारोह से हुआ । संस्था के सम्मेलन महासचिव ब्रह्माकुमार निर्वैर जी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया । मंच पर राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष भ्राता गिरिराज प्रसाद तिवारी, उत्तरप्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता लोकपति जी त्रिपाठी, उदयपुर राजघराने के राणा महेंद्र सिंह जी, प्रमुख उद्योगपति मनमोहन मोदी, लुधियाना के संसद सदस्य भ्राता एम.एस. गिल, संस्था की प्रमुख प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी, उपमुख्य प्रशासिका दादी निर्मल शांता जी, राजस्थान के मुख्यमंत्री के संसदीय सचिव भ्राता चंद्रशेखर शर्मा, ऑस्ट्रेलिया के चार्लिस हाग आदि उपस्थित थे ।

इस अवसर पर अपने संदेश में संसद सदस्य एम.एस. गिल ने कहा कि आज विश्व जल रहा है। उसको परमात्मा का सहारा चाहिए । क्योंकि बिना उसके सहारे के जीवन में शांति नहीं आ सकती है। वह सहारा यहां ब्रह्माकुमारी बहिनें राजयोग के माध्यम से दे रही हैं । उन्होंने कहा कि निश्चय ही कलियुग जायेगा, सतयुग आयेगा ।

राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष भ्राता गिरिराज तिवारी जी ने कहा कि मैं राजस्थान विधानसभा का अध्यक्ष होने के नाते सभी का हार्दिक स्वागत करता हूं । ये बहिनें ऐसी पवित्र गंगायें हैं जो सारे विश्व को सुख-शांति पवित्रता का संदेश दे रही हैं । मैं विश्वास से कहता हूं कि आज सारे विश्व में इन बहिनों का कार्य तेज़ी-से फैल रहा है । राजस्थान भी इसमें पूर्ण सहयोगी है ।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणिं जी, मुख्य प्रशासिका प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि शांति के दाता परमपिता परमात्मा का मुख्य संदेश है कि हे मेरी संतान आत्माएं इस शरीर रूपी रथ पर रथी होकर रहेंगे तो सहज ही कर्म-इंद्रियों पर अनुशासन कर सकेंगे। कहावत भी है—मन जीते जगतजीत । आप हम अपनी कर्म-इंद्रियों के अधिकारी बनेंगे तभी विश्व के राज्य अधिकारी बन सकेंगे । हम सभी के परम प्यारे पिताश्री जी का भी यही मुख्य संदेश था कि सारे विश्व

माउंट आबू: ओमशांति भवन में अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन के स्वागत समारोह में अपने उद्गार प्रगट करते हुए भ्राता गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी जी, अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा। मंच पर (बाएं से) ब्र.कु. दादी निर्मलशांता जी, दादी प्रकाशमणि जी, भ्राता लोकपति त्रिपाठी, उ.प्र. के स्वास्थ्य मंत्री, महाराजा महेंद्र सिंह, उदयपुर।

को दैवी राजस्थान बनाना है । इसी उद्देश्य को लेकर यहां पर इस राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया कि राजस्थान के घर-घर में परमपिता परमात्मा का संदेश पहुंचे । यह विश्व एक परिवार है उसमें भारत महान तीर्थ है, और उस भारत में भी माउंट आबू सबसे महान तीर्थ है जो कि अरावली की गोदी में आप सब आत्माओं के अब्बा का घर है। कहावत भी है चेरिटी बिगइनस एट होम। इसीलिए मेरा राजस्थान के भाई-बहिनों से अनुरोध है कि वो पहले राजस्थान के हर आत्मा को राजयोगी बनायें । तभी विश्व की प्रत्येक आत्मा राजयोगी बनेगी । और यह सारा विश्व एक सुंदर बगीचा बन जायेगा । घर-घर में ज्ञान दीपक जलाने से ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं, इस शुभ आशा के साथ मैं आप सबका स्वागत करती हूं ।

उत्तरप्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता लोकपति त्रिपाठी जी ने अपनी शुभकामना संदेश में कहा कि आबू की पवित्र धरती पर ५० वर्षों से यह महान कार्य हो रहा है जिसकी विश्व को परम आवश्यकता है । मैं यहां आकर बहुत प्रभावित हुआ हूं । क्योंकि राजस्थान में हज़ारों बहिनों ने जौहर दिखाया है और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया है । ऐसे पवित्र राजस्थान की भूमि पर इस महान कार्य का आयोजन हुआ है इसके लिए मैं आयोजकों का हृदय से आभारी हूं। जबकि विश्व में इतने आवणिक हथियार बन चुके हैं कि उसका तीन बार विनाश हो सकता है ऐसे समय पर इस प्रकार के आयोजन की अत्यंत आवश्यकता है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी सुदेश, निदेशिका राजयोग केंद्र लंदन ने कहा कि मैं पश्चिम के सभी देशों की ओर से इस महासम्मेलन की शुभकामनाएं दे रही हूं। इस महान आयोजन को देखकर मेरे मन में देवताओं के सोलह कलाओं का चित्र घूम गया है। राजस्थान अपनी चित्रकला में प्रसिद्ध है। मेरी शुभकामना और शुभभावना के साथ-साथ दृढ़ विश्वास भी है कि परमपिता परमात्मा के चरित्र को चित्र में उतारने का कार्य हम सभी मिलकर करेंगे । राजस्थान की मेंहदी मशहूर है तो मैं आप सबसे अनुरोध करूंगी कि ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा द्वारा रोपण हुए ज्ञान की मेंहदी का पौधा लेकर आप सभी यहां से जावें। और अपने जीवन को परमात्मा के मिलन के रंग में सदाकाल के लिये रंग लें। जिस प्रकार भागीरथ ने गंगा का अवतरण करके अनेकानेक आत्माओं को पावन बनाया, राजस्थान ऐसी भूमि है जहां से ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा दिया जा रहा सच्चे ज्ञान की गंगा बहाई जा रही है। जिस प्रकार यहां की वीरांगनाओं ने चिता पर अपने जौहर प्रकट किये अब हमें भी ज्ञान चिता पर चढ़कर काम चिता को भस्म करना है। क्योंकि हम सभी परमपिता परमात्मा की सजनियां भी हैं ।

राजस्थान के मुख्यमंत्री के संसदीय सचिव भ्राता चंद्रशेखर ने अपने शुभ संदेश में कहा कि सारे विश्व में शांति का संदेश देने की आवाज़ इस यूनिवर्सल पीस हॉल से गुंजेगी। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इस जलती हुई दुनिया को बचाने का महान कार्य चल रहा है तथा मानव की आत्माओं को ऊंचा उठाने के लिये जो यहां की हज़ारों ब्रह्माकुमारी बहिनें एवं ब्रह्माकुमार भाई दिन रात मेहनत कर शिवबाबा का संदेश सारे विश्व में पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं उसके लिए मैं अपने को समर्पित करता हूं और आशा दिलाता हूं कि इस कार्य के लिए पूरा-पूरा योगदान दूंगा ।

मोदी नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति भ्राता मनमोहन मोदी जी ने अपने शुभ संदेश में कहा कि जो शांति मुझे यहां मिली है वह आजतक मुझे कहीं भी नहीं मिली है। और मेरी यही इच्छा है कि बाबा मुझे बार-बार यहां बुलाये।

राजस्थान की क्षेत्रीय संचालिका ब्रह्माकुमारी रतनमोहनी जी ने इस सम्मेलन का उद्देश्य बतलाते हुए कहा कि हम सबको मिलकर इस राजस्थान को दैवी राजस्थान बनाना है। परमपिता परमात्मा ने राजस्व अश्व रूद्र ज्ञान यज्ञ इस आबू की महान भूमि पर रचा है जिस यज्ञ में हमें अपने मनोविकारों की आहुति देनी है। और हम अपनी कर्मेंद्रियों पर अनुशासन करेंगे तभी हम विश्व महाराजन श्री नारायण तथा विश्व महारानी श्रीलक्ष्मी के समान बन सकते हैं ।

अपने अध्यक्षीय प्रवचन में राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी निर्मल शांता, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संयुक्त प्रशासिका ने कहा कि सभी देवताओं की मूर्ति के आगे जाकर कहते हैं कि विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, कहते हैं लेकिन वे यह नहीं जानते कि विषय विकार से कैसे छूटेंगे ? यह विश्वविद्यालय काम, क्रोध, लोभ आदि विषय विकारों पर विजय पाने की शिक्षा पिछले ५० वर्षों से देता आ रहा है। और मेरा दृढ़ विश्वास है कि विषय विकारों पर ही विजय पाने से हम पवित्रता सुख-शांति सम्पन्न नई दुनिया इस धरा पर ला सकते हैं ।

उदयपुर के महाराजा महेंद्र सिंह जी ने अपने शुभ संदेश में कहा कि मनुष्य अज्ञानतावश ऐसे कर्म कर देता है जिनसे मन में अनेक विकार उत्पन्न होते हैं और उससे जीवन अशांत और दुखी हो जाता है। यह संस्था मनुष्य के जीवन से विकारों को समूल नष्ट करके जीवन में सच्ची सुख और शांति का जो महान कार्य पिछले ५० वर्षों से कर रही है वह अति प्रशंसनीय है। ☐

अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्‌घाटन समारोह

माउट आबू—१३ फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन का विधिपूर्वक उद्‌घाटन ओमशांति भवन के विशाल सभागार में राजस्थान विधानसभा के सभापति भ्राता गिरिराज प्रसाद तिवारी जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया । मोदी उद्योग समूह की माता गायत्री मोदी ने अपने स्वागत भाषण में इस सम्मेलन में देश-विदेश से पधारे प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत किया । छोटी-छोटी बालिकाओं द्वारा भी स्वागत नृत्य एवं गीत गाकर अनूठे ढंग-से सभी का स्वागत किया ।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्य प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी ने राजस्थानी समाज की राष्ट्र के उत्थान में भूमिका पर खोजपूर्ण विचार व्यक्त किये और कहा कि राजस्थान की संस्कृति को अपनाने वाला प्रत्येक व्यक्ति राजस्थानी ही है । भले ही वह राजस्थान में निवास न करता हो । उन्होंने कहा कि ''नैतिकता नैतिक पुस्तकों से ज्यादा इतिहास की पुस्तकों से सीखी जा सकती हैं।'' राजस्थान का इतिहास हमें बहुत कुछ सिखाता है । गणगौर का त्योहार यह बताता है कि एक समय इन कन्याओं ने विश्व-कल्याण हेतु ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन किया और परमपिता परमात्मा को वरण किया, वह इतिहास दुहराया जा रहा है । परमात्मा शिव ज्ञान वर्षा कर रहे हैं जिसमें ब्रह्माकुमारी बहिनें स्वयं परमात्मा का वरण कर विश्व का कल्याण कर रही हैं । परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञान यज्ञ रचा, उसकी ही यादगार अजमेर के पास पुष्कर में ब्रह्मा जी का मंदिर है। माउंट आबू में ही सूर्यवंश एवं चंद्रवंश की यज्ञकुण्ड से उत्पत्ति हुई वह ज्ञानकुण्ड यही ईश्वरीय विश्वविद्यालय है । इस ज्ञान यज्ञ से ही सतयुग त्रेता के सूर्यवंशी चंद्रवंशी तैयार हो रहे हैं । उन्होंने कहा कि उदयपुर के राजा एकलिंग शिव को ही राजा मानकर राज्य करते थे यह परम्परा भी यही है कि एकलिंग शिव ही सर्व का परमपिता है। उसको जानकर मानकर चलें तो सर्व विश्व में एकता स्थापित हो सकती है। एकता आत्मा एवं परमात्मा के साथ होते ही मन की एकता से सबकी एकता हो सकती है। राजस्थानी समाज का मुख्य गुण वीरता है। तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्यरूपी छ: विकारों को जीतना भी उनकी वीरता है।

डेविड गुडमैन ने अनुभव सुनाया कि किस तरह ईश्वरीय विश्वविद्यालय की राजयोग की शिक्षाओं से मेरे जीवन में पूर्ण परिवर्तन आया है । मैंने पवित्रतापूर्ण जीवन जीने की कला यहां से सीखी है । मुझे १० वर्ष राजयोग की शिक्षा लेते हुआ है ।

भ्राता चंद्रशेखर शर्मा राजस्थान के मुख्यमंत्री के संसदीय सचिव ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहिनें क्रियात्मक शिक्षा देती हैं जिससे मनुष्य के जीवन में परिवर्तन आता है । इन बहिनों को निश्चय है, परमपिता परमात्मा का साहचर्य प्राप्त है जिनसे शक्ति लेकर ये बहिनें पवित्रता एवं शांति की किरणें विश्व में फैला रही हैं । उन्होंने कहा कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में सार्वभौमिक ज्ञान दिया जाता है जिससे हर धर्म, जाति, वर्ग, देश का व्यक्ति लाभ उठा रहा है। यहां की राजयोग विधि इतनी प्रभावशाली है कि व्यक्ति की जीवन चर्या एवं कार्यशैली सतोगुणी बन जाती है । यहां आकर प्रत्येक को अपनापन महसूस होता है । उन्होंने कहा कि मैंने यह फैसला लिया है कि सक्रिय रूप से इस महान ज्ञान की धारा को जन-जन तक पहुंचाने हेतु सक्रिय सहयोग करूंगा।

बम्बई उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस ए.डी. तातेड़ जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यहां का पवित्र आध्यात्मिक वातावरण देखकर मेरे चित्त को बड़ी पवित्रता एवं शांति मिली । ज़स्टिस तातेड़ ने विश्वास व्यक्त किया कि राष्ट्रीय एकता का कार्य निश्चय ही ब्रह्माकुमारी बहिनें करके रहेंगी । आज देश में जो झगड़े-फसाद एवं पृथकतावाद फैल रहा है वह यहां की आध्यात्मिक शिक्षा से समाप्त किया जा सकता है। क्योंकि यहां धर्म की सही व्याख्या सिखाई जाती है।

राजस्थान विधानसभा के सभापति भ्राता गिरिराज प्रसाद तिवारी ने अपने उद्‌घाटन भाषण में कहा कि सौहबत एवं भूमि का प्रभाव अवश्य पड़ता है । यहां ब्रह्माकुमारी आश्रम में प्रवेश करते ही यहां के पवित्र एवं शांत वातावरण को देखते ही मन में पवित्रता एवं शांति आती है । यहां की धवल वस्त्रधारी पावन बहिनों को देखते ही उनकी पावनवाणी सुनते ही मन एकदम

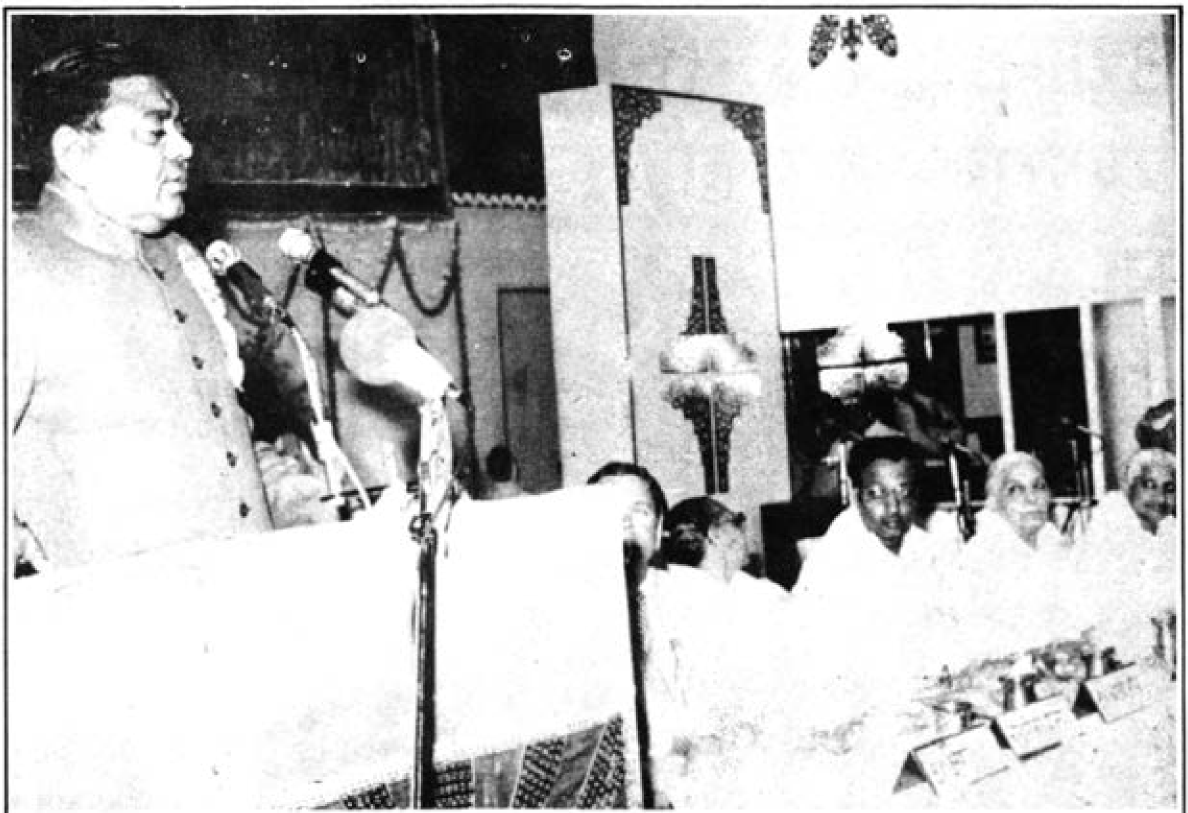

भ्राता लोकपति त्रिपाठी जी, स्वास्थ्य मंत्री उ.प्र. सभा को संबोधित करते हुए।

शांत हो जाता है । जो तड़पते हैं, बेचैन हैं, परेशान हैं, उन्हें यहां शांति की धारा मिलती है जिससे उनकी शांति की प्यास बुझती है । यह वह स्थान है जहां से अध्यात्म एवं शांति का निर्यात हो रहा है । उन्होंने सभी का आह्वान किया कि जो यहां सिखाया जा रहा है उसे सब लेकर जायें—और जन-जन तक पहुंचायें । आज हर्ष का विषय है कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की शिक्षाएं बुद्धिजीवी वर्ग को भी मान्य हो रही हैं । इसमें देश-विदेश के शासनाध्यक्ष, जज, प्रोफेसर, डॉक्टर्स, इंजीनियर्स, व्यापारी सभी आ रहे हैं, इसे मान रहे हैं ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि हे आत्माओं आपने विनाशी धन तो खूब कमाया अब शिव परमात्मा से वह अविनाशी ज्ञान-धन भी ले लो जिससे तुम्हारा जीवन अमूल्य हीरे तुल्य बन जायेगा । इससे तुम्हें अविनाशी सुख-शांति पवित्रता २१ जन्म तक के लिए प्राप्त होगी । इस संगमयुग में अविनाशी ज्ञानरत्नों को प्राप्त कर लो । परमपिता परमात्मा शिव एक ऐसा राजस्थान बना रहे हैं जहां एक मत, एक भाषा, एक राज्य होगा । हम सब एक आत्मा हैं जो एक पिता परमात्मा की संतान हैं । हम सब एक देवी-देवता-धर्म के हैं । मेरा-मेरा छोड़ो, तेरा-तेरा कहो । आपने कहा कि अहम् भाव से मेरा-मेरा करने से मतभेद पैदा होते हैं, अशांति बढ़ती है । यह विनाश भी अहम् भाव एवं ईर्ष्या के कारण ही हो रहा है । स्वार्थ भाव सर्व का विनाश कराता है । शिवबाबा मनमनाभव का मंत्र देकर इन सब विकारों से छुड़ा देते हैं । यह जीवन चिंता की चिताओं पर जलने के लिए नहीं है । जीवन खुशी से जियो, रो-रोकर क्यों जी रहे हो ? हाय-हाय क्यों कर रहे हो ? अरे, भगवान आया है, राजयोग सिखा रहा है उसे सीखो, जीवन जीने की कला सीखो । वाह-वाह मेरा भाग्य यह खुशियां मनाओ, सबकी भलाई करके भलाई लो । मन मंदिर में झाड़ू लगाओ अपने जीवन से रागद्वेष-ईर्ष्या, नफरत, विकार छोड़ने का सच्चा व्रत रखो तो जीवन में पूर्णमासी हो जायेगी । जीवन सोलह कला सम्पूर्ण बन जायेगा। उस स्वर्णिम दुनिया को लाने के लिये ही साधना करनी है । थोड़ा-सा त्याग करो। राजयोग सीखो तो जीवन महान बन जायेगा । सारे दुख समाप्त हो जायेंगे । भारत स्वर्ग बन जायेगा।

कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमार बृजमोहन जी ने किया, भ्राता कुसुम ने धन्यवाद किया ।

उद्योग में शांतियुक्त प्रशासन कैसे हो ?

माउंट आबू—१३ फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राजस्थानी सम्मेलन में देश-विदेश के उद्योगपतियों ने उद्योग में शांतियुक्त प्रशासन विषय पर सामूहिक परिचर्चा की । इस गोष्ठी की अध्यक्षता कानपुर की राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आत्मइंद्रा जी ने की । मुख्य वक्ता ब्रह्माकुमारी उषा बहिन, राजयोग प्रशिक्षिका बम्बई ने चर्चा आरम्भ करते हुए कहा कि राजयोग के अभ्यास से कार्यों में ऐसी कुशलता आ जाती है, व्यवहार में ऐसी कुशलता आ जाती है कि सभी कार्य शांतिपूर्वक चलने लगते हैं । उन्होंने कहा कि उद्योग में जब तक एक दो को 'सुख दो सुख लो' की भावना नहीं होगी तब तक शांति नहीं हो सकती । यदि उद्योग में योग रूपी मिठास मिला दें तो कारोबार भी बढ़ेगा तथा शांति भी होगी । पारिवारिक भावना भी रहे । यही भावना स्वयं परमपिता परमात्मा हमें सिखाते हैं । अत: योग एवं संबंध दोनों रखने हैं । अधिकार एवं कर्तव्य का भी समन्वय करके चलना है।

कलकत्ता के उद्योगपति बृजेंद्र खण्डेलवाल ने विषय पर चर्चा प्रस्तुत की कि यदि शांतियुक्त उद्योग चलता है तो उत्पादन बढ़ता है, यदि अशांति है तो उत्पादन तो कम होता है मजदूर एवं मालिक भी अशांत हो जाते हैं । उन्होंने कहा कि यदि उद्योगपति यह सोच लें कि मजदूर अपना ही परिवार है, उसकी सुख-सुविधा मेरी सुख-सुविधा है तो निश्चय ही प्रेमभाव से शांति रहती है। अशांति का कारण ज्यादा लाभ प्राप्त करने का लोभ भी होता है, यह भी न रखा जाये।

मद्रास के उद्योगपति कांतीलाल सान्धवी ने परिचर्चा में बोलते हुए कहा कि मुझे इस बात की खुशी है कि राजस्थान में आध्यात्मिक राजस्थानी सम्मेलन हो रहा है । राजस्थानी प्रवासी जहां भी देश में या विश्व में उद्योग चला रहा है वह सबको साथ लेकर चलता है । उसके उद्योगों में अपेक्षाकृत अशांति कम ही होती है। फिर भी वर्तमान शासन व्यवस्था नौकरशाही रही है कि अच्छी-से-अच्छी इंडस्ट्री में भी न चाहते हुए भी तनाव बढ़ जाते हैं । उसका कारण उद्योगपति ही नहीं होता वरन् मजदूरों में भी ज्यादा लेने की भावना रहती है। दोनों में ही लोभ का भाव रहता है। उसको आध्यात्मिकता से ही समाप्त किया जा सकता है।

नमक उत्पादन के प्रमुख उद्योगपति रामगोपाल जी ने कहा कि मजदूर एवं उद्योगपति दोनों को ही लोभ-लालच छोड़ने की आवश्यकता है इसलिए दोनों को ही आध्यात्मिकता की, राजयोग सीखने की आवश्यकता है । इससे लोभ-लालच छूटेगा एवं शांतिपूर्वक उद्योग चल सकेगा ।

बीकानेर की ब्रह्माकुमारी कमल बहिन ने सामूहिक योग का अभ्यास कराया ।

जयपुर के उद्योगपति ब्रह्माकुमार मदनलाल शर्मा ने उद्योग में शांतियुक्त प्रशासन विषय पर बोलते हुए कहा कि शांति वही दे सकता है जिसके पास शांति होगी । मशीनों को कंट्रोल करने

माउंट आबू: अन्तर्राष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन के अन्तर्गत हुई 'उद्योग में शांतियुक्त प्रशासन' विषय पर कार्यशाला में (बाएं से) ब्र.कु. मदनलाल शर्मा, भ्राता रामगोपाल उद्योगपति साम्भरलेक, ब्र.कु. उषा, भ्राता कांतिलाल एच. संघवी, ब्र.कु. आत्मइंद्रा, भ्राता कमलनैन दुगड़, उद्योगपति अहमदाबाद।

वाला अपने को कंट्रोल नहीं कर पा रहा । उन्होंने कहा कि रिमोट कंट्रोल के द्वारा विज्ञान ने हमें कितना वरदान दिया है लेकिन हमारा खुद का अशांत मन क्या कर रहा है ? उन्होंने उदाहरण दिया कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की दादी मुख्य प्रशासिका विश्व में १५५० सेवाकेंद्रों का संचालन कर रही है लेकिन उनके सामने कोई समस्या नहीं है क्योंकि मन शांत है इसलिए सबको प्रेम-से शांत रखती हैं । देह-अभिमान अशांति का कारण है । आत्मिक स्थिति से शांति मिलती है । राजयोग ऐसा माध्यम है जिससे सभी सहज हो जाता है। शांति का सागर परमात्मा स्वयं आकर शांति दे रहा है। जिंदगी जीने का तरीका परमात्मा सिखा रहा है।

ट्रिनिडाड के प्रोडक्टिविटी मैनेजर एन्थनी वीक्स ने कहा कि कर्मों की गति गहन है । जैसा बोयेंगे वैसा काटेंगे, सभी को सुख से जीने दो । आत्मिक स्थिति एवं राजयोग से यह शक्ति आती है जिससे उद्योग में कोई समस्या नहीं रहती है।

अहमदाबाद के उद्योगपति कमल नयन दुग्गड़ जी ने कहा कि समता के भाव से उद्योग में शांति रखने में सहयोग मिलेगा । अपनी हार को समझने वाला एक दिन जीत अवश्य करता है । मानवता से उद्योग चलायें । केवल उद्योग की उन्नति नहीं अपनी आत्मिक उन्नति भी सोचनी है ।

पेरिस-फ्रांस के भ्राता फ्रान्सुआ ने कहा कि आत्मभाव से शांति होगी । कार्यशाला की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी आत्मइंद्रा जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि उद्योग की समस्त समस्याओं का हल राजयोग ही है । उसका सभी अभ्यास करें । जितना धन बढ़ता है उतना चरित्र गिरता है । अत: संतुष्ट करने की कला सीखो । संतुष्ट रहो, संतुष्ट करो । ब्रह्माकुमार नंदलाल ने सभी को उच्चविचार के लिए धन्यवाद दिया। □

महिला कार्यशाला

भावी पीढ़ी में महिलाओं का योगदान विषय पर बोलते हुए महिला वर्ग की कार्यशाला की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मनोहर इंद्रा, निदेशिका राजयोग प्रशिक्षण केंद्र ने कहा कि राजयोग के अभ्यास से मनुष्य के जीवन में मधुरता, स्नेह, सहयोग, सहनशीलता, हर्षितमुखता आदि सद्‌गुण स्वत: आते हैं । जिसके आधार से हम वर्तमान अशांत एवं अनेक समस्याओं से भरपूर समाज को बदलकर सुख-शांति सम्पन्न विश्व की स्थापना कर सकते हैं । उन्होंने आगे कहा कि विश्व की लगभग आधी जनसंख्या महिलाओं की है अत: उन्हें इस कार्य में आगे आना चाहिए ।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए मोदीनगर की बहिन गायत्री मोदी ने कहा कि आज की शिक्षित महिलाओं में अपने-आपको समयानुसार ढालने की कला ना होने से पारिवारिक जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । राजयोग की शिक्षा से उसमें यह कला आ सकती है । अत: उन्होंने उपस्थित जनसमूह को राजयोग की कला सीखने के लिए प्रेरित किया । ताकि वे अपने पारिवारिक जीवन को सुखी बनाने के साथ-साथ एक शांतिमय समाज एवं देश को बनाने में मदद कर सकें ।

ब्रह्माकुमारी शीला ने कहा कि वर्तमान समाज की समस्याएं मुख्यत: लोगों का भौतिकवाद की तरफ झुकाव होने के कारण ही है । महिलाएं समाज सुधार के कार्य में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं । जबकि आज महिलाओं को पिछड़ा हुआ वर्ग समझा जाता है । और उनकी कमजोरियों का लाभ उठाकर उन्हें इस योगदान देने से वंचित रखा जाता है। कहा जाता है कि माता ही बालक की प्रथम गुरु है। अत: वर्तमान समाज में फैली हुई बुराइयों को दूर करने में महिलाएं तभी अपना उचित स्थान

माउंट आबू: राजस्थानी विश्व सम्मेलन में 'महिला कार्यशाला' का दृश्य। मंच पर (बाएं से) ब्र.कु. कुंज, श्रीमती महेश्वरी साँधी, बहन कमल दुगड़, ब्र.कु. शील, श्रीमती श्यामलता बजाज, ब्र.कु. हेमलता विराजमान हैं।

प्राप्त कर सकती हैं जब वे अपने जीवन में राजयोग के अभ्यास से आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करेंगी और वर्तमान समाज को परिवर्तित कर सकेंगी ।

श्रीमती शांता भानावति, प्राचार्य वीर बालिका कालेज जयपुर ने कहा कि यहां आने के पूर्व मुझे इस संस्था के बारे में बहुत ही भ्रांतियां थीं परंतु यहां आने पर मेरी भ्रांतियां दूर हो गईं तथा मैं वादा करती हूं कि मैं अपने महाविद्यालय में ब्रह्माकुमारी बहिनों का कार्यक्रम आयोजित कराती रहूंगी ।

बहिन कमला दुग्गड़, समाज-सेविका, अहमदाबाद ने कहा कि दहेजप्रथा आज के समाज की सबसे ज्वलंत समस्या है उसकी जिम्मेवारी पुरुषों पर आ जाती है न कि महिलाओं पर । निस्वार्थ सेवा एवं समर्पण भावना के द्वारा ही हम वर्तमान समाज और देश को सुख-शांति सम्पन्न बना सकते हैं ।

श्रीमती श्यामलता बजाज, कलकत्ता ने आए हुए मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा कि समाज को बदलने में महिलाओं को विशेष योगदान देना है और यह तभी सम्भव है जब वे अपने जीवन में एकाग्रता और एकता का गुण अपनावेंगी।

पटना सेवाकेंद्र की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी कुंज ने कहा कि परमपिता परमात्मा शिव द्वारा सिखाए जा रहे दिव्य ज्ञान एवं राजयोग के अभ्यास से ही हम काम, क्रोध, आदि विकारों पर विजय प्राप्त कर समाज के परिवर्तन में सहयोग प्रदान कर सकते हैं ।

इसी प्रकार के विचार महेश्वरी संघवी, समाज-सेविका, जयपुर एवं ट्रिनिडाड सेवाकेंद्र की ब्रह्माकुमारी हेमलता ने भी दिये। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी शील, उदयपुर ने किया। □

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की शिक्षा जीवन में मधुर रस भरती है

□ नरेंद्र भानावत

माउंट आबू—१३ फरवरी—शिक्षा नीति का आधार केवल अक्षर ज्ञान या जीवन यापन हेतु रोज़गार की प्राप्ति ही नहीं, बल्कि मानव के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना चहिए । अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन में पधारे देश-विदेश के करीब दो सौ शिक्षाविदों की 'शिक्षा नीति का आधार' विषयक परिचर्चा सभा में यह निर्णय लिया गया ।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की तामिलनाडु जोन की इंचार्ज़ बहन रोजी ने आज की शिक्षा-व्यवस्था पर दृष्टिपात करते हुए बताया कि आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना भर रह गया है तथा जीवन को दिव्य बनाने की कला से वंचित है । मानव जीवन को दिव्य गुण सम्पन्न बनाने की कला व शिक्षा केवल ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा ही सिखलाई जाती है । उन्होंने कहा कि शिक्षा का ध्येय चरित्र निर्माण करना होना चाहिए । चरित्रवान शिक्षक ही अपने विद्यार्थियों को चरित्रवान बना सकते हैं क्योंकि कहावत है कि "जैसा कर्म हम करेंगे, हमें देख और करेंगे।" ज्ञान-सागर परमपिता शिव हम सभी के परमशिक्षक व मार्गदर्शक हैं ।

माउंट आबू: 'राजस्थानी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन' के अंतर्गत हुई 'शिक्षा नीति का आधार' कार्यशाला में मंच पर (बाएं से) प्रो. हरीश शुक्ला, प्रिंसीपल आर.के. महेश्वरी, बी.के. केन, ब्र.कु. रत्नमोहिनी तथा ब्र.कु. शिवकन्या विराजमान हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफेसर डॉ. नरेंद्र भानावत ने कबीरदास जी की प्रसिद्ध साखी ''**पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय । ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।**'' का उल्लेख करते हुए कहा कि आज की शिक्षा मानव को टुकड़ों में बांटती है। बालक पहले चींटी की तरह सूचनाओं को संग्रह करता है और फिर मकड़ी की भांति जाल में उलझ जाता है। आज की शिक्षा से बुद्धि का अजीर्ण हो जाता है । परंतु ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा दी जा रही शिक्षा जीवन में मधुर रस पैदा करती है। सच्ची शिक्षा का उपासक कभी घबराता नहीं । शिक्षा का आधार है, समता पैदा करना, आंतरिक गुणों को जमा करना ।

पाटन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर हरीश शुक्ल ने बताया कि शिक्षा का आधार आध्यात्मिकता न होने के कारण ही धार्मिक अंधश्रद्धा व्याप्त है। उन्होंने स्पष्ट किया कि आध्यात्मिकता भी एक कला और विज्ञान है जिससे जीवन महान बनता है। सच्चे धर्म का अर्थ ही है—जीवन में सत्य, अहिंसा धैर्यता, आदि गुणों को लाना। इन गुणों को हम अपने जीवन में आध्यात्मिकता के द्वारा ही ला सकते हैं।

ब्राजील से आये हुए ब्र.कु. केन जेनल ने कहा कि शिक्षा का अर्थ है स्व पर राज्य। जब हम अपनी कर्मेंद्रियों पर शासन कर सकेंगे तभी विश्व पर राज्य संभव होगा।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी रत्नमोहिनी, क्षेत्रीय संचालिका, राजस्थान, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि शिक्षा का अर्थ है सीखना। सीखने का आधार सिखाने वाले और सीखने वाले दोनों पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि राजविद्या के साथ आध्यात्मिकता का समन्वय होना चाहिए। आज की शिक्षा ने अभिमान को बढ़ावा दिया है, परंतु सहनशीलता, नम्रता को जन्म नहीं दिया। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों में प्रेम व शुभभावना होने से जीवन श्रेष्ठ बन सकेगा। आज की शिक्षा ने विवेक को विशाल बनाया, परंतु विवेक में शुद्धता और दिव्यता नहीं दी। यदि शिक्षा पद्धति में स्नेह को जागृत किया जाए तो स्वपरिवर्तन से विश्व-परिवर्तन हो सकता है। □

मा‌उंट आबू—१४ फरवरी—ओमशान्ति भवन में हुए खुले अधिवेशन में सम्बोधित करते हुए ऑस्ट्रेलिया के अभिनेता भ्राता रोबिन रामसे।

भारत की संस्कृति महान् है क्योंकि इसका स्थापक स्वयं परमात्मा है..

ब्र.कु. दादी जानकी

माउंट आबू—१३ फरवरी—अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन का सायंकालीन खुला अधिवेशन आज ओमशांति भवन के विशाल सभागार में विश्वभर से पधारे दो हजार प्रतिनिधियों एवं दर्शकों के बीच प्रारम्भ हुआ ।

प्रारम्भ में राजस्थान के मशहूर लोक गायक ओमव्यास ने ईश्वरीय स्मृति का मधुर गीत सुनाया ।

जयपुर की राजयोग प्रशिक्षिका ब्रह्माकुमारी पूनम ने सांस्कृति वैभव का आधार आध्यात्मिकता विषय पर बोलते हुए कहा कि राजस्थान अपनी संस्कृति के वैभव में सर्वोत्तम रहा है । यहां के भवन निर्माण, अदम्य वीरता एवं सहिष्णुता, प्रेम एवं दानवीरता, रानी पद्मावती का जौहर, पन्नाधाय का बलिदान, मीरा की भक्ति एवं वीरों की वीरता निश्चय ही एक गहन आध्यात्मिक आधार लिये हुए था । आज भी देखें तो पाते हैं कि भारत देश का सबसे शांत प्रदेश यही है यहां कभी भी साम्प्रदायिक दंगे नहीं हुए हैं । खुशी का विषय है कि आज आध्यात्म की अलख परमपिता परमात्मा शिव ने राजस्थान की भूमि माउंट आबू से जगाई है । जिसकी शांत आध्यात्मिक ध्वनि विश्व के कोने-कोने में पहुंच रही है, जिससे एक दिन अवश्य ही स्वर्णिम संसार आयेगा ।

ब्रह्माकुमारी एलीनोर जो जर्मनी के हेमबर्ग शहर से पधारी हैं, ने अपने विचार व्यक्त किये कि आध्यात्मिकता के समावेश से मेरे सांस्कृति वैभव का विकास हुआ है । राजयोग से मेरे जीवन में परिवर्तन आया है और पश्चिम की संघर्षपूर्ण सभ्यता और संस्कृति से निकलकर मैंने भारत की सुख-शांति एवं पवित्रता देने वाली संस्कृति को अपनाया है।

तामिलनाडु में राजस्थान संघ के उपाध्यक्ष सैयरचंद नाहर ने कहा कि आध्यात्मिक जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है । ज़िंदगी का सफर बिना आध्यात्म के पूरी तरह नहीं हो सकता है । उन्होंने कहा कि मुझे ब्रह्माकुमारी बहिनों के महान कार्य ने मेरे दिल को छू लिया है । मैं मद्रास जाकर सहयोग दूंगा । आबू में आध्यात्मिकता का चमत्कार है, यह मैंने यहां देखा ।

बम्बई बार एसोसिएशन के अध्यक्ष नारी गुरसहानी जी ने कहा कि मैं और मेरी धर्मपत्नी यहां से कुछ सीखने आये हैं । उन्होंने कहा कि आज हमारे देश को यह गौरव है कि हमारे देश में ये ब्रह्माकुमारी देवियां विश्व को अमन का, शांति का संदेश दे रही हैं । संयुक्त राष्ट्रसंघ ने इन पूज्य देवियों को शांति-पदक प्रदान किया है । सारा विश्व आज ब्रह्माकुमारियों की तरफ शांति के लिए देख रहा है क्योंकि विश्व विनाश के कगार पर पहुंच चुका है। केवल आध्यात्मिक शक्ति ही इसे बचा सकती है जो इस महान बहिनों ने परमात्मा से प्राप्त की हैं ।

माउंट आबू: अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी सम्मेलन के खुले अधिवेशन में संबोधन करते हुए भ्राता नारी गुरसहानी जी।

ब्राज़ील देश की ब्रह्माकुमारी लुसियाना ने राजयोग अभ्यास के अनुभव प्रस्तुत करते हुए कहा कि मैं एक कट्टर क्रिश्चियन परिवार की मांसाहारी भौतिक जीवन जीने वाली थी लेकिन एक दिन ब्राज़ील में ब्रह्माकुमारी बहिनों का विवेकयुक्त ज्ञान सुना उनसे राजयोग सीखा और मेरा जीवन एकदम बदलने लगा, मेरे जीवन में हल्कापन आने लगा, सात्विक आहार-विहार एवं व्यवहार बन गया । जब मैंने राजयोग की सेवाएं औरों तक पहुंचायीं तो मेरी स्थिति और भी ऊंची होने लगी ।

काठमाण्डू नेपाल के उद्योगपति प्रह्लाद राय अग्रवाल ने कहा कि नेपाल में जानवरों की बलि दी जाती है, यह हिंसा क्यों ? क्योंकि मनुष्य में विकार हैं । वास्तव में उसे अपने काम, क्रोध आदि विकारों की आहुति देकर दैवी-गुणों को अपनाना होगा।

सभा की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी दादी जानकी, अतिरिक्त प्रशासिका ने अपने प्रेमपूर्ण प्रवचन में कहा कि हमारे भारत की संस्कृति महान है क्योंकि इस महान संस्कृति को ५००० वर्ष पहले स्वयं परमात्मा ने स्थापित किया था । वही फिर आकर स्थापित कर रहा है । कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी शशी ने किया । □

भावी भारत के निर्माण में व्यवसायियों का योगदान

माउंट आबू—१४ फरवरी—अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन के प्रात:कालीन खुले अधिवेशन में भावी भारत के निर्माण में व्यवसायियों का योगदान विषय पर विश्वभर से पधारे प्रतिनिधियों ने प्रबुद्ध जनों के चिंतनयुक्त प्रवचन सुने।

ट्रिनिडाड से पधारी राजयोग प्रशिक्षिका ब्रह्माकुमारी हेमलता बहिन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज आध्यात्मिक संस्कृति की महानता का केवल भारत में ही नहीं वरन् विश्वभर में हर देश में इसकी अपनी महत्ता है। भारतीय संस्कृति का सारा विश्व में सम्मान है। ट्रिनिडाड, सूरीनाम, मोरीसियस आदि देशों में तो ब्रह्माकुमारी बहिनों को पूज्यदेवी के रूप में सम्मान देते हैं। विदेशों में जो भारत मूल के लोग रहते हैं वे भारतीय त्योहारों को बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम से मनाते हैं उनकी अब भी मान्यता है जो भी भारतीय होगा वह शाकाहारी रहेगा, सात्विक होगा। भारी संख्या में देवी-देवताओं के मंदिर विदेशों में बने हैं।

फीरोजबाद (आगरा) के उद्योगपति बालकृष्ण गुप्ता अध्यक्ष आल इंडिया ग्लास एसोसिएशन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि धर्म आचरण की वस्तु है। वह आचरण सिखाने वाला हो सकता है जो पहले स्वयं के आचरण में उसे लाया हो। वह आचरण की सच्चाई मैंने प्रत्यक्ष रूप से यहां ब्रह्माकुमारी बहिनों में देखी है। आज मेरे जीवन के ५० वर्ष से जो संस्कार थे उनका केवल ३ दिन में परिवर्तन तो नहीं कर सका परंतु विश्वास हो रहा है कि ऐसी पवित्र बहिनों की पवित्र क्रियात्मक शिक्षाएं अवश्य ही जीवन परिवर्तन लायेंगी। उन्होंने अपने हृदय के उद्गार व्यक्त किये कि मैंने बिना किसी विशेष शिक्षा के भी कांच उद्योग की छ: यूनिटें कायम करके देश का सबसे बड़ा कांच उद्योग बनाया है जिससे विदेशी मुद्रा आती है परंतु, मेरे जीवन में बिल्कुल भी शांति नहीं है। तीन हज़ार मज़दूर हैं उनसे काम लेना आसान बात नहीं है।लेकिन यदि मुझे राजयोग से कुछ बल मिल जाये तो मेरे उद्योग में शांति हो सकती है।

ऑस्ट्रेलिया के सिनेमा-उद्योग के एक्टर राबिन रामसे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि धन कमाना तो आसान है परंतु शांति पाना कोई आसान कार्य नहीं है। वह सुख-शांति आध्यात्मिकता से मिलती है। मुझे ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ऑस्ट्रेलिया शाखा में अपने जीवन के तीन प्रश्नों के उत्तर मिले कि मैं कौन हूं। ईश्वर क्या है। जीवन का उद्देश्य क्या है ?

न्यूयार्क की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहिन ने कहा कि आज व्यक्ति काम कम दाम ज्यादा चाहता है। पूंजीपति दाम ज्यादा और आराम ज्यादा चाहता है। आराम से हराम खर्चे शुरू हो जाते हैं। उन खर्चों से वर्गभेद पैदा होता है। स्वभाव संस्कार एवं कार्य में नैतिकता न होने के कारण शोषण शुरू हो जाता है। शोषण शुरू होते ही निर्माण कार्य में कमी होने लगती है। आज परमपिता परमात्मा भी विश्व का नवनिर्माण करने आये हैं। उनके निर्माण कार्य में हम उनके बच्चे मन-वचन-कर्म से लगे हैं। ये सहयोगी पहले अपने जीवन का निर्माण करके ही दूसरों का निर्माण करने को तत्पर हुये हैं क्योंकि जब तक स्वयं का निर्माण नहीं होता तब तक दूसरों का निर्माण करने का मन ही नहीं करेगा। वाणी ही नहीं निकलेगी। कर्म में भी नहीं आयेगा। अत: स्वयं के निर्माण से ही कर्मों में कुशलता लाकर हम हर क्षेत्र में निर्माण कर सकते हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने हमें अपने आर्थिक सामाजिक समिति का सदस्य बनाया, उसका कारण भी यह राजयोग ही है। इससे मानव अधिकारों की रक्षा, युवा कल्याण, नारी कल्याण, बाल कल्याण, समग्र स्वास्थ्य आदि की सभी बातों में सहयोग मिलता है।

मैक्सिको के उद्योगपति अरनेस्टो ने कहा कि इस विश्वविद्यालय का विद्यार्थी बनने के बाद यहां के राजयोग की शिक्षा से मेरे उद्योग में मुझे बहुत लाभ एवं शांति मिली है। मेरे जीवन में प्रेम, शांति एवं सहानुभूति आई है। स्वयं के परिवर्तन से सबको परिवर्तन करने की शक्ति मुझमें आयी है। मेरी पत्नी भी बच्चे भी राजयोग से लाभ उठा रहे हैं।

आचार्य प्रभाकर मिश्र, यूनिवर्सल सनातन धर्म फाउंडेशन, नयी दिल्ली ने कहा कि उद्योग के पूर्व योग है। अगर योग नहीं है तो उद्योग चल नहीं सकता है। बिना योग के चलने वाले उद्योग मानव के शोषण केंद्र बन जाते हैं। गीता का सहज राजयोग ही योग है। और जहां राजयोग है वही राजस्थान है। सब प्रांत बदले जा सकते हैं लेकिन राजस्थान नहीं बदला जा सकता है। क्योंकि यह भारत लक्ष्मी नारायण का रामराज्य रहा, राम का राजस्थान रहा, मनुष्य का राजस्थान रहा है। राजस्थान में सर्वत्र प्रचार:स्तु गोप-गोपिका हैं। हे ब्रह्मा तुम इन गोप-गोपियों को कुमार-कुमारी बनाकर विश्व में प्रचार हेतु

माउंट आबू: १४ फरवरी—खुले अधिवेशन में मंच पर (बाएं से) रॉबिन रामसे, भ्राता अरनेस्टो, आचार्य प्रभाकर मिश्र, ब्र.कु. दादी चंद्रमणि तथा भ्राता के एन. मोदी जी।

भेजना। ज्ञान-यज्ञ के रूप में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ही कर रहा है। ईश्वरीय विश्वविद्यालय स्वयं परमात्मा द्वारा चलाया गया है। यह शास्त्र प्रमाण है। यदि उद्योगपति अहंकार को छोड़ निर्माण अर्थात् मान छोड़कर कार्य नम्रता से करें तो सारे भारत में प्रकाश आ सकेगा।

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, बम्बई ने कहा कि मेरे व्यवसाय चार्टर्ड एकाउंटेंट ने मेरे जीवन में आध्यात्मिक उन्नति लायी। मुझे बाबा ने इसी आधार से ईश्वरीय सेवा पर लगाया। त्रिकालदर्शी बाप हर बच्चे से कार्य ले लेता है। गृहस्थ भी व्यवसाय है मेरी युगल एवं माता आदि सभी मेरे कार्य में सहयोगी हैं। उन्होंने कहा कि आज शासन की अनेक पद्धतियां हैं। पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद आदि इन सबमें सबसे आदर्श देवन्तावाद रामराज्य सतयुग लाने की बात परमात्मा यहां ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा करा रहा है। सर्व समान भाव वहां रहता है।

मोदी ग्रुप इंडस्ट्रीज़ के अध्यक्ष के.एन. मोदी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त किये कि मैं विश्व के कई देशों में गया वहां तो धन बहुत है परंतु शांति बिल्कुल नहीं है। हमारे भारत में सुदूर भाव में बेहद शांति है। गांव का भोला व्यक्ति अपनी रोटी भी मेहमान को देकर प्रेम प्रदर्शित करता है। क्योंकि उसमें सच्ची आध्यात्मिकता है। ब्रह्माकुमारी बहिनें सेवाभाव से चरित्र निर्माण का कार्य कर रही हैं।

बहिन गिन्नी मोदी, मोदीनगर की उद्योग परिवार की समाज-सेविका ने कहा कि दुनिया के सारे गरीब धन, वस्त्र, रोटी मांगते हैं परंतु दुनिया के सारे धनवान शांति मांगते हैं। मुझे यहां आकर दादीजी का बहुत प्यार मिला है बेहद शांति मिली है।

अंत में आज की सभा की अध्यक्ष एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संयुक्त प्रशासिका ब्रह्माकुमारी दादी चंद्रमणि जी ने अपने प्रवचन में कहा कि सारे विश्व को सुख-शांति, पवित्रता, प्रेम एवं आनंद देने वाला सर्व आत्माओं का पिता परमात्मा परमधाम से स्वयं आ चुका है वह स्वयं सुना रहे हैं कि बच्चे तुम स्वयं को भूल गए, घर को भूल गए, स्वधर्म को भूल गए, स्वकर्म को भूल गए। अब मैं तुम बच्चों को अंधेरे में भटकने से निकालकर राह दिखाने आया हूं। अब मेरे बताए रास्ते पर चलो। मैं तुम आत्माओं का पिता हूं। तुम भी शरीर नहीं, आत्मा हो। परमधाम से सृष्टि पर ड्रामा खेलने आए थे। चक्र पूरा हुआ घर वापिस चलो।

ब्रह्माकुमार रामस्वरूप भटनागर भाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सभा का संचालन ब्रह्माकुमार बलदेव पाठक जयपुर ने किया। ■

पृष्ठ ३२ का शेष

स्लाइड फिल्म के माध्यम से आंकड़े दर्शाते हुए बताया कि इलेक्ट्रॉनिक्स कम्प्यूटर तकनीकी, माइक्रो चीप्स, फाईबर ओप्टिक चीप्स, कोक्साइल केबलस्, अल्ट्रा साउंड, गामा किरणों, लेसर किरणों के माध्यम से रेडियोलॉजी चिकित्सा प्रणाली द्वारा बहुत कम समय में एवं अत्यंत अल्प खर्चे में व्यक्ति की सही डाइग्नोसिस करके रोगों का निदान करने में सफलता मिलने लगी है, जो सन् २००० तक इतनी विकसित हो जायेगी कि सभी को स्वस्थ्य प्रदान करना सम्भव हो सकेगा।

नई दिल्ली की होली फैमिली अस्पताल की निदेशिका, डॉ. लुसिया पामिकुलम तथा यूनाइटेड किंगडम के डॉ. डेविड गुडमैन ने मानसिक एवं सामाजिक रोगों के निवारण में राजयोग को सर्वाधिक सरल, सुलभ एवं सफल उपाय बताया। ●

स्वर्णिम युग की स्थापना के लिये ईश्वरीय योजना

माउंट आबू—१४ फरवरी—अंतर्राष्ट्रीय राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन के आज के सांयकालीन अधिवेशन में, स्वर्णिम युग की स्थापना के लिये ईश्वरीय योजना पर खुला विचार विमर्श, विश्वभर से पधारे दो हजार प्रतिनिधियों ने किया।

इस विषय पर बोलते हुए बम्बई की राजयोग प्रशिक्षिका ब्रह्माकुमारी नलिनि जी ने कहा कि कौन यह नहीं चाहेगा कि एक ऐसा संसार हो जहां सभी में प्रेम हो, शांति हो, सुख, वैभव एवं भाईचारा हो, सारा विश्व एक परिवार जैसा हो। लेकिन आज क्या देख रहे हैं, सब कुछ उल्टा हो रहा है। चारो ओर मारामारी, हिंसा एवं बेचैनी है। सब एक दूसरे के खून के प्यासे बने हुये हैं। दया, क्षमा, करूणा एवं प्रेम प्राय: लोप होता जा रहा है। भौतिक प्रगति हो रही है लेकिन चारित्रिक रीति से मानव का अधोपतन होता जा रहा है। हर प्रकार की दुश्चरित्रता के कारण ही हर प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हुई हैं। इन समस्याओं का समाधान स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने एक कार्ययोजना के रूप में दिया है जो यहां ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में पवित्रता के आधार से क्रियान्वित हो रही है। संकल्पपूर्वक चलाई जा रही इस योजना से निश्चय ही स्वर्णिम संसार आयेगा जो बहुत शीघ्र ही आप अपनी आंखों से देखेंगे।

कानपुर के उद्योगपति महावीर प्रसाद नेमानी ने अपने विचार व्यक्त किये कि वर्तमान समय विश्व को एकता, प्रेम एवं शांति का मार्ग ब्रह्माकुमारी बहिनें दिखा रही हैं। उससे अवश्य स्वर्ग आयेगा। आपने एक निजी अनुभव सुनाया कि उनका पुत्र जो अपनी बुराईयों के कारण घर में अशांति मचाता रहता था वह उनके कहने से ब्रह्माकुमारी बहिनों के सेवाकेंद्र पर राजयोग सीखने जाने लगा और मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य है कि मेरा बिगड़ा हुआ बेटा कितना श्रेष्ठ, शांत एवं अच्छा बन गया है। इससे मेरा घर स्वर्ग बन गया हौ तो अवश्य ही विश्वास होता है कि ये बहिनें एक दिन सारे बिगड़े हुए विश्व को सुधारकर स्वर्ग बना ही देंगी।

हीरालाल सेवड़ा सम्पादक हितैषी बीकानेर ने विषय पर बोलते हुए कहा कि यहां राजस्थानी सम्मेलन में हमने शांति एवं सुख की अनुभूति की है। आदरणीय दादी जी के वचनामृत सीधे दिल की गहराई में समा जाते हैं और दृढ़ विश्वास हो रहा हैकि यह कार्य अश्वय ही स्वर्णिम युग लायेगा। हम सब ही इस महान कार्य में अपनी उंगली दें तो यह गोवर्धन पहाड़ उठ जायेगा। कृष्णपुरी में स्वर्ग आ जायेगा।

लॉस एंजिल्स अमेरिका की बहिन डेनिस ने अपना राजयोग द्वारा जीवन परिवर्तन का अनुभव सुनाया कि मुझे लंदन के राजयोग सेंटर पर सच्चा प्यार, सच्चा ज्ञान एवं भारत की सच्ची योगी बहिनें मिली जिनसे ज्ञान प्राप्त कर मेरा जीवन पवित्र एवं योगी बन गया। और जीवन बदलते-बदलते मैं राजयोगी ब्रह्माकुमारी बन गयी। उन्होंने कहा कि सारे विश्व में जहां भी ब्रह्माकुमारी बहिनें जाती हैं लोग उनके सच्चे पवित्र जीवन से प्रभावित होते हैं और मुझे विश्वास होता है कि अवश्य ही स्वर्ग पृथ्वी पर आ जायेगा।

अपने उपसंहार प्रवचन में महान राजयोगी चिंतक ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी ने कहा कि आप सभी ने सुयोग्य वक्ताओं के विचार इस सम्मेलन में सुने, अब आप स्वयं निर्णय करें कि हमें स्वयं के जीवन के लिये क्या करना है। जब चारों तरफ खौफनाक स्थिति है, विनाशकारी स्थिति है तो सोचो कि क्या आप इससे बच जायेंगे यह बात जहां है वहां दूसरी ओर ब्रह्माकुमारी शिव शक्तियां, पवित्रता एवं शांति के बल से नई दुनिया लाने की तैयारी कर रही हैं । ये बहिनें डंके की चोट से कह रही हैं कि सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करो, शुद्ध अन्न का सेवन करो । पांच विकारों को पूरी तरह से निकालो । यह निर्माण का संदेश दिया जा रहा है तो निर्णय करो, फैसला करो, अपने जीवन को इस महान कार्य में लगा दो । उन्होंने सतयुग लाने की प्रक्रिया बताई कि उसमें पवित्रता होगी शांति होगी । सर्व सुखी होंगे एक धर्म एक भाषा एक राज्य होगा । कलियुग के जाने के चिन्ह विनाशकारी बातें हमारे सामने हैं । हम दोनों के बीच में खड़े हैं । यह कारण कार्य का संबंध है कि कलियुग विनाश होगा तो अवश्य सतयुग स्थापित होगा । हमारे सच्चे संकल्प कर्म एवं विचार ही सतयुग लायेंगे।-वह कार्य ये बहिनें शक्तियां कर रही हैं। हमारे संस्कार परिवर्तन राजयोग की अग्नि से ही दग्ध होंगे । बिना हमारे कर्मों की पवित्रता के सतयुग नहीं आयेगा । राजयोग से हमारे रूपी विकार समाप्त हो जाते हैं । ऐसे योग एवं ज्ञान को स्वयं परमात्मा दे रहा है । विकार समाप्त होंगे सतोगुणी बनेंगे तो सतयुग आ ही जायेगा । परमात्मा सत्य है । वही यह सत्य ज्ञान दे रहा है । इसलिए यह सत्य ज्ञान ही बुराइयों को छुड़ाने में मदद देता है । यह वही प्राय:लोप ईश्वरीय ज्ञान है जो किसी शास्त्र में नहीं मिलेगा । वरन् सम्मुख आकर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

से ऊपर उठने के लिए यह राजयोग सहज समाधि है । इससे निश्चित रूप से तनावमुक्त होकर कई रोगों से छुटकारा मिल जाता है । सन् २००० तक क्या हम ऐसे स्वस्थ नहीं हो सकते हैं ताकि लोग स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकें । स्वस्थ शब्द का अर्थ ही है अपनी स्व की आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाएं । उन्होंने कहा कि डॉक्टर्स की बातें सभी विश्वासपूर्वक मानते हैं । जैसे धूम्रपान के परिणामों का डॉक्टरों द्वारा किया गया निष्कर्ष लोग मानते हैं । जो डॉक्टर स्वयं धूम्रपान या मदिरापान करते हों, और इनसे छूटना चाहते हों वह भी इस राजयोग के माध्यम से लाभ लेकर छोड़कर जाएं।

अपने आशीर्वचन में ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि सर्वशक्तिवान, सर्व को सदा वरदान देने वाले परमपिता परमात्मा के सभी प्रिय आत्माओं आज आप सभी उसी रूहानी अविनाशी सुप्रीम सर्जन की यूनिवर्सिटी में पहुंचें हो। मुझे बड़ा ही हर्ष हो रहा है। आप सभी शरीर के डॉक्टर तो बन गये, अब यहां से डबल डॉक्टर की उपाधि लेकर जायें। रोगी का आधा रोग तो डॉक्टर की संतोषप्रद सहानुभूति से ही समाप्त हो जाता है। डॉक्टरों को व्यवहार कुशल होना अति आवश्यक है। दादी जी ने कहा कि बीमारी कर्मभोग है, जिसे कर्मयोग से ठीक किया जा सकता है। ऐसे श्रेष्ठ कर्म करें जिससे भोगना न भोगनी पड़े। राजयोग से कर्मों की कुशलता में वृद्धि होती है। जिससे न रोग रहता, न भोग रहता, न दर्द रहता, न दवा रहती। ऐसी अमर टॉनिक मिल जाती है जो स्वयं रूहानी सर्जन ही देते हैं। दवा के साथ दुआ भी परमात्मा ही देते हैं। उन्होंने कहा 'डॉक्टर दर्द मिटाता है', दर्द अनेक प्रकार का होता है। इसलिए आप यहां स्वयं एवं सर्व के लिए 'आयुष्मान भव, नीरोगी भव' का वरदान लेकर जायें।

पश्चिम जर्मनी से पधारी डॉक्टर हैडी फिटकाव ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि "मैं विगत ८ वर्षों से राजयोग का लाभ ले रही हूं, जिसके लाभों से आपको भी लाभांवित करना चाहूंगी। इस राजयोग के आधार से मैंने शारीरिक एवं मानसिक रोगों की चिकित्सा करने में बहुत लाभ पाया है। क्योंकि शरीर का संचालन करने वाली आत्मा है। यदि आत्मा स्वस्थ है तो शरीर स्वस्थ है। शरीर से पृथक होने की कला राजयोग से मिल जाती है। आत्मिक स्थिति से विकारों एवं शारीरिक आवेशों पर नियंत्रण करने की शक्ति प्राप्त होती है। सभी डॉक्टर्स यह जानते हैं कि शरीर भौतिक तत्व से बना है, इसको आत्मा चला रही है। लेकिन परमात्मा इस शरीर के बंधन से अलग है। इसलिए वह सर्व रोगों से मुक्त है। इसी तरह हमें भी राजयोग अभ्यास से शरीर से उपराम होने की शक्ति परमपिता परमात्मा से प्राप्त करके रोगों से निवृत्ति प्राप्त करनी है।

बम्बई के डॉ. जे.बी. भट्ट ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि "चिकित्सकीय पेशा दिनोंदिन विशेषज्ञता की जटिलता में उलझता जा रहा है । कोई आंख का डॉक्टर, तो कोई दांत का, कोई हृदय का तो कोई हड्डी का । इतने विशेषज्ञताओं के होते हुए भी रोग दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं । उन्होंने कहा कि जैसे किसी

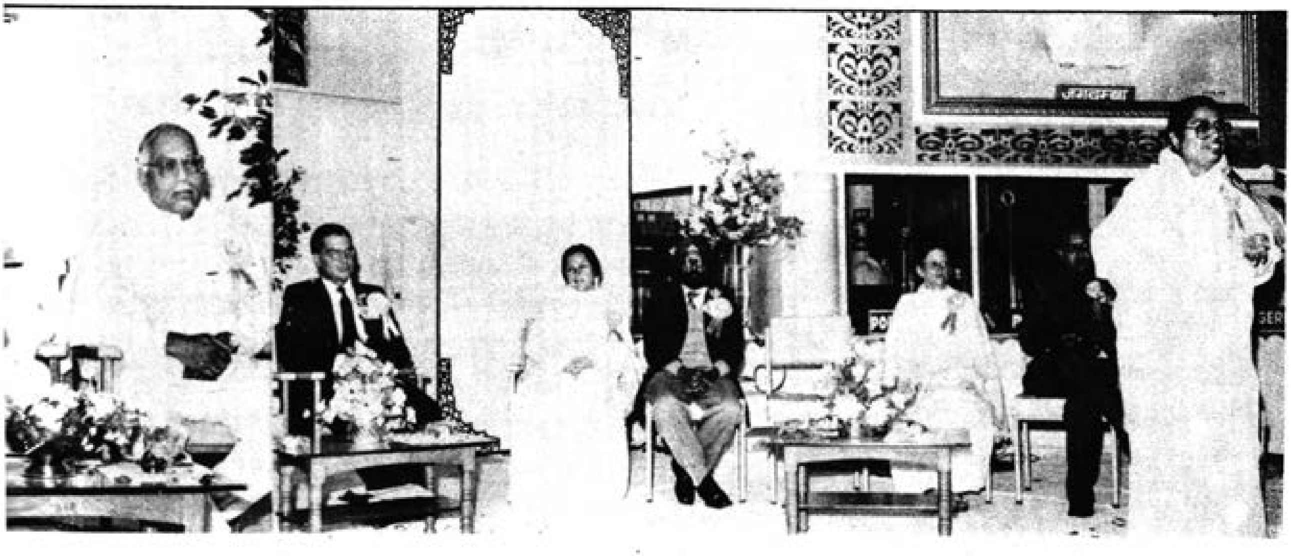

बाये डॉ. जे.बी. भट्ट, डॉ. एस.के. दास गुप्ता, सिरोही, ब्र.कु. दादी जानकी, ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि, ब्र.कु. भ्राता जगदीश चंद्र जी, चार्लस जे. नोवेक, हेडी फिटकाव.

से ऊपर उठने के लिए यह राजयोग सहज समाधि है । इससे निश्चित रूप से तनावमुक्त होकर कई रोगों से छुटकारा मिल जाता है । सन् २००० तक क्या हम ऐसे स्वस्थ नहीं हो सकते हैं ताकि लोग स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकें । स्वस्थ शब्द का अर्थ ही है अपनी स्व की आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाएं । उन्होंने कहा कि डॉक्टर्स की बातें सभी विश्वासपूर्वक मानते हैं । जैसे धूम्रपान के परिणामों का डॉक्टरों द्वारा किया गया निष्कर्ष लोग मानते हैं । जो डॉक्टर स्वयं धूम्रपान या मदिरापान करते हों, और इनसे छूटना चाहते हों वह भी इस राजयोग के माध्यम से लाभ लेकर छोड़कर जाएं।

अपने आशीर्वचन में ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि सर्वशक्तिवान, सर्व को सदा वरदान देने वाले परमपिता परमात्मा के सभी प्रिय आत्माओं आज आप सभी उसी रुहानी अविनाशी सुप्रीम सर्जन की यूनिवर्सिटी में पहुंचें हो। मुझे बड़ा ही हर्ष हो रहा है। आप सभी शरीर के डॉक्टर तो बन गये, अब यहां से डबल डॉक्टर की उपाधि लेकर जायें। रोगी का आधा रोग तो डॉक्टर की संतोषप्रद सहानुभूति से ही समाप्त हो जाता है। डॉक्टरों को व्यवहार कुशल होना अति आवश्यक है। दादी जी ने कहा कि बीमारी कर्मभोग है, जिसे कर्मयोग से ठीक किया जा सकता है। ऐसे श्रेष्ठ कर्म करें जिससे भोगना न भोगनी पड़े। राजयोग से कर्मों की कुशलता में वृद्धि होती है। जिससे न रोग रहता, न भोग रहता, न दर्द रहता, न दवा रहती। ऐसी अमर टॉनिक मिल जाती है जो स्वयं रुहानी सर्जन ही देते हैं। दवा के साथ दुआ भी परमात्मा ही देते हैं। उन्होंनें कहा 'डॉक्टर दर्द मिटाता है', दर्द अनेक प्रकार का होता है। इसलिए आप यहां स्वयं एवं सर्व के लिए 'आयुष्मान भव, नीरोगी भव' का वरदान लेकर जायें।

पश्चिम जर्मनी से पधारी डॉक्टर हैडी फिटकाव ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि ''मैं विगत ८ वर्षों से राजयोग का लाभ ले रही हूं, जिसके लाभों से आपको भी लाभांवित करना चाहूंगी। इस राजयोग के आधार से मैंने शारीरिक एवं मानसिक रोगों की चिकित्सा करने में बहुत लाभ पाया है। क्योंकि शरीर का संचालन करने वाली आत्मा है। यदि आत्मा स्वस्थ है तो शरीर स्वस्थ है। शरीर से पृथक होने की कला राजयोग से मिल जाती है। आत्मिक स्थिति से विकारों एवं शारीरिक आवेशों पर नियंत्रण करने की शक्ति प्राप्त होती है। सभी डॉक्टर्स यह जानते हैं कि शरीर भौतिक तत्व से बना है, इसको आत्मा चला रही है। लेकिन परमात्मा इस शरीर के बंधन से अलग है। इसलिए वह सर्व रोगों से मुक्त है। इसी तरह हमें भी राजयोग अभ्यास से शरीर से उपराम होने की शक्ति परमपिता परमात्मा से प्राप्त करके रोगों से निवृत्ति प्राप्त करनी है।

बम्बई के डॉ. जे.बी. भट्ट ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि ''चिकित्सकीय पेशा दिनोंदिन विशेषज्ञता की जटिलता में उलझता जा रहा है । कोई आंख का डॉक्टर, तो कोई दांत का, कोई हृदय का तो कोई हड्डी का । इतने विशेषज्ञताओं के होते हुए भी रोग दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं । उन्होंने कहा कि जैसे किसी

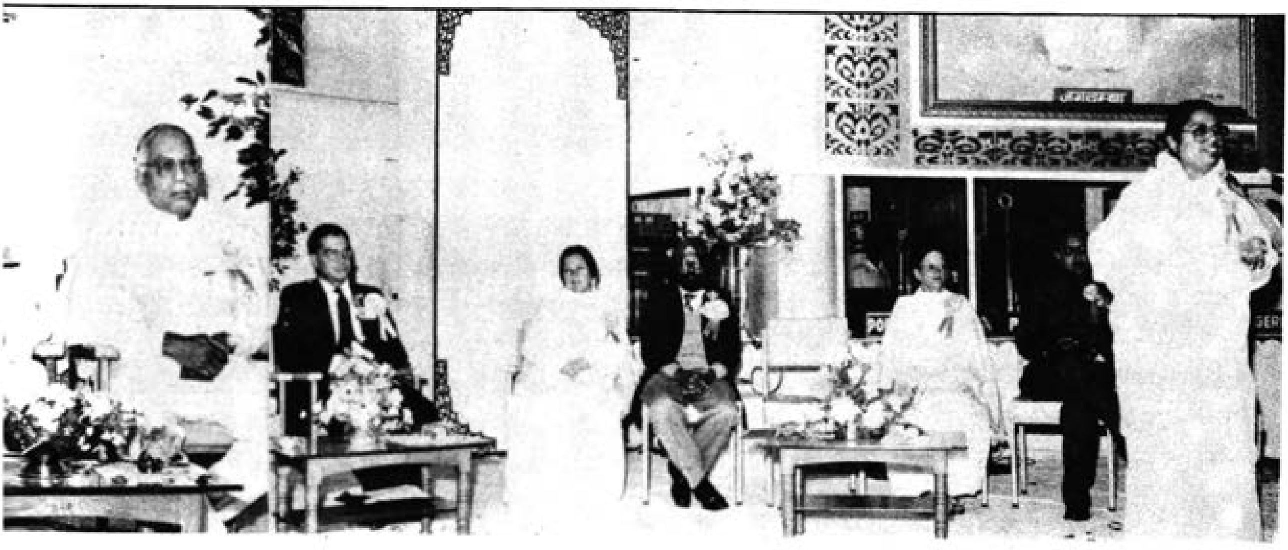

बायें डॉ. जे.बी. भट्ट, डॉ. एस.के. दास गुप्ता, सिरोही, ब्र.कु. दादी जानकी, ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि, ब्र.कु. भ्राता जगदीश चंद्र जी, चार्लस जे. नोवेक, हेडी फिटकाव.

बच्चे को अंधापन है, तो उसका कारण पौष्टिक आहार की कमी है, जो उसके माता-पिता की गरीबी के कारण नहीं मिल पाता। और इसका कारण सामाजिक अर्थ-व्यवस्था है। इसी तरह हर रोग का कारण केवल शारीरिक ही नहीं, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक भी है। अत: यह संपूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन बहुत आवश्यक और समयानुकूल है।

सिरोही के डॉ. एस.के. दासगुप्ता ने शुभकामना में कहा कि आज के विश्व में विशेषकर भारत में शरीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक स्वास्थ्य की अत्यंत आवश्यकता है, क्योंकि सारा विश्व रोगी है। उन्होंने बताया कि अधिकांश रोगों का कारण मनोवैज्ञानिक ही होता है, क्योंकि भावनाग्रंथियां बीमारी पैदा करने का कारण होती हैं। शरीर मनोविज्ञान यह निर्धारित करता है कि पेट के सभी रोग मन के भावनाग्रस्त होकर तनाव पैदा होने के कारण ही होते हैं। इन डिप्रेशन की भावनाओं में मन को न आने दें उसका सर्वोत्तम साधन राजयोग है जो यहां ईश्वरीय विश्वविद्यालय में सिखाया जाता है। उन्होंने कहा कि, ''यह राजयोग की शिक्षा तो प्रत्येक मेडिकल कॉलेज में दी जानी चाहिए ताकि चिकित्सा स्नातक वहीं से राजयोग सीखकर सम्पूर्ण स्वास्थ्य अपने मरीजों को प्रदान कर सकें।

बम्बई की थैमिस लेबोरेटरी के निदेशक, डॉ. शांतिभाई पटेल ने कहा कि पवित्रता सुख-शांति की जननी है, पवित्रता से हर प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं समाजिक सुख-शांति मिल सकती है। यह पवित्रता राजयोग से मिलती है।

हुबली (कनार्टक) के डॉ. राधामोहन बड़गंडी ने शुभकामना में कहा कि इस सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन का प्रारम्भ ही शांत राजयोग अभ्यास से हुआ है। यह खुशी की बात है। क्योंकि मेडिकल पेशे में भी शोर को रोगी के लिए हानिप्रद कहा गया है। उन्होंने कन्याओं द्वारा प्रस्तुत भव्य स्वागत नृत्य, दादीजी के महान आशीर्वचनों की सराहना की। उन्होंने कहा कि मैं कनार्टक के सभी डॉक्टरों एवं मेडिकल कालेज के छात्रों की ओर से इस भव्य कॉफ्रेंस की सफलता की कामना करती हूं।

डॉ. चार्ल्स, जे. नोवेसिक, यू.एस.ए. के प्रसिद्ध हड्डी विशेषज्ञ ने कहा कि इस प्रकार की राजयोग की शिक्षा देने वाली संस्था सारे विश्व में होनी चाहिए।

बोकारो के मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. बी.पी. मिश्र ने कहा कि डॉक्टरों को सरकारी प्रतिष्ठानों में कार्य करते हुए इतने नियम एवं विधानों का पालन करने को बाध्य होना पड़ता है कि वह अपने मरीजों की यथायोग्य सेवा और उपचार नहीं कर पाता। इस कॉफ्रेंस में इन समस्याओं पर भी विचार-विमर्श किया जाना चाहिए।

डॉ. आनंदन ने कहा कि आज का डॉ. केवल दवाओं का विशेषज्ञ मात्र रह गया है, वह रोगों के निदान का विशेषज्ञ नहीं रहा है। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य को भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की आवश्यकता है। डॉ. केवल स्वास्थ्य ही दे सकता है, बाकी सुविधाएं उसके हाथ में नहीं हैं।

डॉ. बी.एस. लाम्बा, चंडीगढ़, ने कहा कि मैं इस समग्र स्वास्थ्य सम्मेलन के आयोजन के लिए धन्यवाद देता हूं। राजयोग के माध्यम से रोगों के इलाज पर यहां विचार होगा। इससे जो निष्कर्ष निकलेंगे उनसे निश्चय ही लाभ लेकर सन् २००० तक हम सबको स्वास्थ्य की सुविधा प्रदान कर सकेंगे।

अंत में स्वागत समारोह की अध्यक्षा दादी जानकी जी ने अपने प्रवचन में कहा कि यह बहुत अच्छी बात है कि पहले एक सेकेंड शांत रहा जाये फिर कुछ बोला जाये। सब बीमारियों की एक दवा है—शांति की शक्ति। हर कार्य शांतिपूर्वक करने से अमृतधारा का कार्य होता है। तन रोगी है, पर मन तो शांत और खुश रखें, धन नहीं है, पर मन को शांत खुश रखें। उन्होंने कहा कि हर बीमारी के ३ कारण होते हैं (१) पिछले कर्मों का हिसाब-किताब अनेक जन्मों का है, उसे बुद्वियोग की स्थिति से श्रेष्ठ कर्मों से चुक्तू करना है। (२) हवा-पानी का प्रभाव। इसका भी ध्यान रखकर अपने शरीर का रख-रखाव करना चाहिए। राजयोग से आत्मबल बढ़ता है, सहनशक्ति बढ़ती है, जिससे रोगमुक्ति होते हैं। सहनशक्ति खुश-मिजाज बनाती है। बीती बातें भूल जायें, बार-बार चिंतन न करें। हार-जीत मान-हानि में समान रहना है। मन में कोई भावग्रंथि नहीं बनने देना चाहिए। ईर्ष्या-द्वेष से परे रहना, खुशदिल, रहमदिल रहने से बीमारियां दूर से भाग जाती हैं। हर परिस्थिति में मुस्कुराते रहने से रोग प्रभावहीन हो जाता है। (३) जिस अंग में दर्द हो उस पर ध्यानमग्न हो उदास होने से रोग अधिक बढ़ता है। यदि उस में दर्द की अनुभूति से उपराम हो जायें तो मनसा शक्ति से रोग की भासना चेहरे पर नहीं आयेगी। बीमारी की चिंता छोड़ते ही बीमारी दूर हो जाती है। गुणवान को देख सभी खुश होते हैं, किसी के अवगुण देख सभी को दुख होता है। सभी आत्माओं को परमात्मा की संतान समझ भातृभाव रखने से, प्रेमपूर्ण व्यवहार रखने से कोई मानसिक रोग नहीं होगा तथा सामाजिक स्वास्थ्य कायम होगा।

अंत में डॉ. जयंत पटेल ने धन्यवाद किया। □

मादक पदार्थों का नशा एवं अनिद्रा रोग से छुटकारा

उपर्युक्त विषय पर परिचर्चा गोष्ठी का प्रारम्भ करते हुए गोष्ठी के अध्यक्ष मैसूर मेडिकल कॉलेज के फार्माकोलोजी विभागाध्यक्ष डॉ. टी.एस. कंडास्वामी ने कहा कि विश्वव्यापी मादक द्रव्यों का सेवन का नशा एवं अनिद्रा रोग की रोक-थाम किसी कानून या दवा आदि से नहीं की जा सकती। क्योंकि यह सामाजिक एवं मानसिक कारणों से उत्पन्न होते हैं। अतः इसके लिए व्यक्ति को शरीर को संचालन करने वाली आत्मा का ज्ञान देना विशेष आवश्यक है। राजयोग इसमें विशेष मदद कर सकता है। प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्वक मानसिक तनावग्रस्त व्यक्ति को इन मादक द्रव्यों की हानि बताकर उसका आत्मबल बढ़ाकर छुड़ाया जा सकता है।

अहमदाबाद की कर्मचारी बीमा निगम की चिकित्सा अधिकारी डॉ. कोकिला शाह ने अपने अनुभव सुनाये कि उन्होंने अनिद्रा एवं मादक द्रव्यों के सेवन करने वाले अनेक रोगियों की चिकित्सा राजयोग से की है। राजयोग अपने आप में एक सम्पूर्ण चिकित्सा है।

डॉ. एस.एम. लाधावाला, आई.एम.ए. बम्बई के अध्यक्ष, ने कहा कि चिकित्सा विज्ञान में एक विषय के रूप में राजयोग की विधिपूर्वक शिक्षा दी जानी चाहिए। क्योंकि इस सम्मेलन में यह सिद्ध हो चुका है कि सर्वांगीण स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए मानसिक ही नहीं, सामाजिक रोगों के निवारण में भी राजयोग बहुत लाभदायक है।

बड़ौदा के मेडिकल कॉलेज के मनोचिकित्सा विभागाध्यक्ष डॉ. ए.बी. खुराना ने कहा कि मैंने विश्व के कई देशों में मादक पदार्थों के सेवन करनेवालों पर सर्वेक्षण कार्य किया है। जिसका निष्कर्ष यह है कि किसी दवा से नशेबाजी नहीं छुड़ायी जा सकती। मनोचिकित्सा द्वारा ही यह सम्भव है, इसमें राजयोग बहुत उपयोगी है। अहमदाबाद के डॉ. हर्षद मेहता ने भी यही विचार व्यक्त किये।

बेलगाम के जे.एन. मेडिकल कॉलेज के फोरेंसिक मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष प्रो. डॉ. पी. उमाशंकर ने कहा कि माता-पिता एवं शिक्षक ही जब मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं तो बच्चों पर वही प्रभाव पड़ता है। अतः आदर्श शिक्षा देनेवाला ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ही इस दिशा में सही कदम उठा रहा है।

इस परिचर्चा में अनेकों प्रश्नों के प्रेरणादायक एवं तर्कसम्मत उत्तर में माउंट आबू की राजयोग सेंटर की निदेशिका दादी मनोहर इंद्रा जी ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा व्यक्ति को आत्मबोध एवं परमात्म बोध होता है तथा राजयोग के अभ्यास से परमात्मा सर्वशक्तिमान से सम्बंध जुटाने से आत्मा को बल मिलता है जिससे वह अपनी इंद्रियों एवं मन पर नियंत्रण करने में सफल होता है। मानसिक शांति प्राप्त होने पर उसे किसी प्रकार की नशेबाजी से मन को अचल बनाने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती। □

माउंट आबू: अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन में अपने उद्गार प्रकट करते हुए डॉ. आर.एम. वर्मा, न्यूरो सर्जन बंगलौर।

स्वस्थ जीवन के सिद्धांत

माउंट आबू— १७ फरवरी—अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन के प्रात:कालीन अधिवेशन में ''स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों'' पर गम्भीर विचार हुआ।

लंदन के मेडिकल जर्नलिस्ट नोविली हॉकिन्सन ने कहा कि रोगी को प्रेम एवं सहानुभूति की आवश्यकता होती है। राजयोग एक ऐसी दवा है जिससे जीवन हर प्रकार से स्वस्थ एवं खुशहाल बन जाता है। रोग तो एक आत्मदंड है जो स्वास्थ्य के नियमों का उल्लंघन करने से मिलता है।

बम्बई के ग्रांट मेडिकल कॉलेज के शरीर विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. वर्धाचारी ने कहा कि सामाजिक समस्याओं और आर्थिक अभाव तथा तथा भावनात्मक सम्बंधों में कटुता के कारण तनाव पैदा होते हैं। जिनसे स्वास्थ्य ही नहीं, सामाजिक वातावरण भी बिगड़ता है। तनावमुक्त जीवन के लिए शिथिलिकरण की क्रिया राजयोग के माध्यम से होती है। उन्होंने अपने कथन को अनेक पाश्चात्य विद्वानों एवं भारतीय मनीषियों की उक्तियों का उदाहरण देकर सिद्ध किया कि सम्पूर्ण स्वास्थ्य आध्यात्मिक जीवन जीने से ही प्राप्त होता है।

गुजरात के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के निदेशक डॉ. ओ.पी. गुप्ता ने कहा कि ''विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सम्पूर्ण स्वास्थ्य में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं अध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रहने को ही सम्पूर्ण स्वास्थ्य माना है। उन्होंने कहा कि आज तक सम्पूर्ण स्वास्थ्य के बारे में इतनी गहराई और विस्तार से कभी चर्चा नहीं हो पाई थी। यह सम्मेलन इस प्रकार का पहला सफल प्रयास है। उन्होंने कहा कि राजयोग प्राचीन भारतीय पद्धति का गुप्त रहस्य है, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने इसका वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण किया है। तथा सभी को सरल तरीके से समझाने में सफलता पाई है। इससे अब लगता है कि जनसंख्या नियंत्रण, अपराध नियंत्रण, एवं नशेबाजी से छुटकारा पाने में राजयोग से अवश्य सफलता मिलेगी।

इलाहाबाद के डॉ. आर.के. कपूर ने भी अपने लम्बे भाषण में कहा कि कोई भी कार्य शुरू करने से पूर्व व्यक्ति अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण रख कर शुरू करे तो तनाव नहीं आयेगा और वह कार्य भी कुशलता से सफल होगा। भौतिकवादी शायद यह नहीं जानते कि आध्यात्म भी एक विज्ञान है जिससे सम्पूर्णता आती है। इस सम्मेलन से आध्यात्म की वैज्ञानिक रूपरेखा सबके सामने आयी है जो स्वस्थ जीवन एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में अत्यंत लाभदायक होगा।

बम्बई के सेवाकेंद्र पर राजयोग का अभ्यास करने वाली सिर्फ ६ साल की छोटी बच्ची सुनीता ने अपने प्रभावशाली भाषण से सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया। उसने कहा कि मादक द्रव्यों का सेवन, कलह-क्लेश, अशुद्ध आहार, आदि से अनेक रोग होते हैं। मैं एक छोटी बच्ची भी राजयोग द्वारा अपने मन पर विजय पाकर उन्नत जीवन की ओर बढ़ रही हूं। आप सब लोग भी अपनी बुरी आदतें आदि छोड़ना चाहते हैं, लेकिन इसके लिए इच्छाशक्ति की कमी है। राजयोग से वह दृढ़ आत्मबल मिलता है जिससे आप अवश्य ही अपने सभी दुर्गुणों व कमजोरियों पर विजय पा सकेंगे। सभी राजयोगी बन जायें तो घर-घर में शांति हो जायेगी और सभी रोग समाप्त हो जायेंगे।

अमेरिका के भ्राता चंद्रू महतानी ने अपने अनुभव में शारीरिक अक्षमता का राजयोग द्वारा इलाज का उदाहरण दिया। दिल्ली के डॉ. युगल किशोर ने राजयोग को भी एक चिकित्सा पद्धति बताया। सभा की अध्यक्षा दादी चंद्रमणि जी ने कहा कि स्वयं को आत्मा समझकर कार्य करने से इंद्रियों पर नियंत्रण होगा तथा सदा स्वस्थ रहना सहज होगा। □

माउंट आबू: १७ फरवरी—स्वस्थ जीवन के सिद्धांत विषय पर हुए खुले अधिवेशन में (बाएं से) डॉ. जुगल किशोर जी, ब्र.कु. मीरा, डॉ. आर.के. कपूर, ब्र.कु. दादी चंद्रमणि, डॉ. वर्धा चारी जी तथा भ्राता चंद्रू महतानी जी।

अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन का समापन समारोह

माउंट आबू—१७ फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन के समापन समारोह में विभिन्न देशों से पधारे चिकित्सा प्रतिनिधियों ने 'राजयोग का मनो:चिकित्सकीय आधार' विषय पर विवेचनापूर्ण विचार प्रस्तुत किए।

इस तीन दिवसीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन में करीब १,२०० चिकित्साविशेषज्ञों ने गम्भीर विचार विनिमय के बाद एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया जिसमें सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए राजयोग की शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया गया। प्रस्ताव के मुख्य पहलुओं में कहा गया कि अनेक रोगों की उत्पत्ति मानसिक तनाव के कारण होती है, और राजयोग तनावमुक्ति का सहज उपाय है। राजयोग से मादक पदार्थों की सेवन की आदत तथा अनिद्रा रोग भी छूट पाता है। राजयोग शिक्षा द्वारा व्यक्ति अपने दुर्गुणों एवं कमजोरियों पर विजय पाकर व्यक्तित्व का विकास कर पाता है और सामाजिक स्वास्थ्य निर्माण में सहायक होता है। आत्मबल, दिव्यगुणों एवं दिव्यशक्तियों की प्राप्ति राजयोग से होती है जिससे मानव का व्यक्तित्व दिव्य बनता है। अत: सभी शिक्षा संस्थानों एवं चिकित्सा विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में पाठ्यक्रमों में राजयोग शिक्षा भी एक विषय के रूप में शामिल की जानी चाहिए और इसका अधिकाधिक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।

सम्मेलन के मुख्य संयोजक ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी ने प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि मानसिक तनाव द्वारा पेट के रोग, रक्तचाप वृद्धि, हृदयरोग, मस्तिष्क रोग आदि शारीरिक बीमारियां तो होती ही हैं, साथ-साथ सामाजिक अस्वस्थता होने से विश्व विनाश की ओर अग्रसर होता है। उन्होंने कहा कि हिटलर, मुसोलिनी आदि मानसिक रोगी थे। विश्व महायुद्धों का कारण भी मानसिक तनाव ही है। मानसिक तनावग्रस्त लोग ही भयानक आणविक हथियारों का निर्माण कर रहे हैं। राजयोग अनुशासित और शांतिपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाता है। उन्होंने कहा कि मानव के वंशानुक्रम के रोगों तथा पूर्वजन्म के संस्कारगत रोगों और व्यक्तित्व की कमियों का इलाज किसी दवा से नहीं हो सकता। उनका भी हल राजयोग द्वारा सम्भव है। राजयोगी जीवन उत्तम चेतनायुक्त जीवन होता है। मस्तिष्क का सम्पूर्ण विकास होता है। जिससे आनंदमय जीवन जीया जाता है। राजयोग एक सम्पूर्ण शिक्षा है जो जीवन के हर क्षेत्र की शिक्षाओं का सार प्रस्तुत करती है।

दिल्ली नगर निगम की चिकित्सा अधिकारी डॉ. मंजू गुप्ता ने कहा कि रोग का प्रभाव मस्तिष्क पर और नाड़ी संस्थान, पिट्यूट्री ग्लैंड आदि पर पड़ता है तथा इन ग्रंथियों से स्राव होने लगता है, जिससे शरीर का संतुलन बिगड़ता है। श्वेत रक्त कणिकायें और लाल रक्त कणिकाओं की रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति कम हो जाती है। अत: दिमाग को आराम देकर बहुत से रोगों से बचा जा सकता है। इसके लिए राजयोग उत्तम तरीका है। जिससे सकारात्मक विचार तरंगों की शक्ति से नाड़ी संस्थान और मस्तिष्क की क्रियाओं का संतुलन हो जाता है।

मैक्सिको के डॉ. शाया मिकन ने प्राकृतिक नियमों के पालन तथा भोजन सुधार शारीरिक स्वास्थ्य की महत्ता बताते हुए कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा से मधुमेह, कैंसर, टी.बी. जैसे कठिन रोगों की चिकित्सा में सफलता पाई है। राजयोग में प्राकृतिक चिकित्सा के अनेक नियम आ जाते हैं।

न्यूयार्क की पेडियेट्रिसियन डॉ. कला अयंगार ने चिकित्सा-विज्ञान के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शरीर को स्वस्थ्य रखने के नियमों की ओर ध्यान दिया जाय तो रोग होंगे ही नहीं। राजयोग से रोगों के उत्पत्ति के कारण ही मिट जाते हैं। क्योंकि शरीर का संचालन करने वाली आत्मा ही है। आत्मबल आने से शरीर की इंद्रियों पर स्वत: नियंत्रण सम्भव होता है। यह सब राजयोग से सम्भव है, जो एक सम्पूर्ण विज्ञान है। उन्होंने विश्व के वैज्ञानिकों को चुनौती दी कि राजयोग की गहराईयों में जाकर शोध करें तो पायेंगे कि शारीरिक मानसिक रोग ही नहीं, सामाजिक रुढ़ियों और कुरीतियों और अज्ञानजनित रोगों का भी निदान सम्भव है।

गुजरात के स्वास्थ्य सचिव भ्राता एम.पी. पारेख, ने प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा कि सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन का आयोजन विभिन्न स्थानों में किया जाना चाहिये जिससे सन् २००० तक सभी को स्वास्थ्य मिल सके। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवा में बहनों का प्रमुख स्थान है अत: ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा निश्चय ही राजयोग के माध्यम से सबको सम्पूर्ण स्वास्थ्य उपलब्ध कराया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि गुजरात प्रांत में ब्रह्माकुमारी बहनों ने राजयोग के केंद्र ग्रामस्तर तक खोले हैं। हम शासन के स्तर से भी अपने स्वास्थ्य केंद्रों, अस्पतालों में चिकित्सकों और पारा-मेडिकल स्टाफ को इसका शिक्षण दिलाने का पूरा प्रयास करेंगे।

बैंगलोर के पद्मश्री डॉ. आर.एम. वर्मा ने गुजरात के

स्वास्थ्य सचिव के विचारों का स्वागत करते हुए कहा कि सम्पूर्ण स्वास्थ्य की परिभाषा के अंतर्गत विश्व स्वास्थ्य संगठन ने शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक स्वास्थ्य के चार पहलू स्पष्ट किए हैं। लेकिन आत्मिक या आध्यात्मिक स्वास्थ्य की सही परिभाषा उन्हें अभी तक नहीं मिल पाई है, जो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ही प्रस्तुत कर सकता है। उन्होंने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि सभी राज्य व केंद्र सरकार इसमें पूरा सहयोग देंगी।

गुजरात के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता वल्लभ भाई पटेल ने कहा कि इस विशाल सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन के इतनी सफलता एवं भव्यता से आयोजन के लिए हम सभी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के आभारी हैं। उन्होंने राजयोग को प्राकृतिक मनोचिकित्सा बताते हुए कहा कि शारीरिक उपवास की तरह इससे मन के व्यर्थ एवं अशुद्ध विचारों का उपवास करने की शक्ति मिलती है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए ईश्वरीय विश्वविद्यालय की दिल्ली जोन प्रभारी दादी हृदयमोहिनी जी ने कहा कि इस अभूतपूर्व सम्मेलन में राजसत्ता, मेडिकल सत्ता और मेडिटेशन सत्ता—तीनों के प्रतिनिधि एकमत हुए हैं, जिनके संगठित प्रयास से स्वर्णयुगी सभ्यता का पुनर्निर्माण सहज हो गया है। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय ब्रह्माकुमारी बहनों का कार्य नहीं, वरन् इसके पीछे परमात्म-शक्ति कार्य कर रही है। अतः सम्पूर्ण स्वास्थ्य की सुख-शांति-आनंदमय पावन सभ्यता अवश्य आनी है। हम सभी को अपना जीवन पवित्र एवं योगी बनाना है। हमारे बदलते ही यह दुनिया बदल जायेगी।

मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने अपने प्रेरणादायी प्रवचन में कहा कि सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। फिर भी मेरा कहना है कि आप लोगों ने जो भी तीन दिन तक यहां सुना और समझा तथा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया उसे क्रियात्मक रूप प्रदान करें। स्वयं भी राजयोग की गहराइयों का अध्ययन करें और अपने मरीजों को भी समझायें। राजनेता अपने जीवन में आचरण कर जनता को बतायें। तभी सारे विश्व में स्वर्ण जयंती अर्थात् स्वर्णिम दुनिया होगी।

राजयोग रिसर्च एंड एज्युकेशन फाउंडेशन के कोषाध्यक्ष डॉ. बनारसी भाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया और सभा-संचालन डॉ. हेमलता ने किया। □

सन् 2000 तक सभी के लिए स्वास्थ्य

माउंट आबू—१६ फरवरी—विश्व में भारी जन-जनसंख्या वृद्धि, कुपोषण, प्रदूषण, मानसिक तनाव, सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के कारण बढ़ती जा रही नई-नई बीमारियों के बावजूद सन् २००० तक सभी को स्वास्थ्य प्रदान करना सम्भव हो सकेगा। अंतर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन के अंतर्गत "सन् २००० तक सभी के लिए स्वास्थ्य" विषय पर कार्यशाला में चिकित्सा विशेषज्ञों की गम्भीर परिचर्चा के बाद यह निष्कर्ष निकला।

पश्चिमी जर्मनी की मनोरोग तथा चेतना विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. हैडी फिटकाव ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि अधिकांश बीमारियां मानसिक असंतुलन, नकारात्मक विचारों, हीन-मानसिकता, गलत धारणाओं तथा भावनात्मक उद्वेगों के कारण पैदा होते हैं। सैंकड़ों व्यक्तियों पर राजयोग ध्यान प्रक्रिया के प्रयोग पर गत आठ वर्षों के अपने शोधकार्य की सफलता बताते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि राजयोग से हर वर्ग के व्यक्ति को विशेष मानसिक शांति, स्थिरता ही नहीं, उच्च भावनाओं की तरंगों से आदर्श एवं उन्नत जीवन बनाने की शक्ति भी मिली है।

भोपाल के गांधी मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. एस.बी. राव तथा गुजरात राज्य इंडियन मेडिकल एसोसियेशन के अध्यक्ष डॉ. के.के. शाह ने गरीबी के कारण कुपोषण, अशिक्षा, नशेबाजी, प्रदूषण और सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं तथा सीमित साधनों पर प्रकाश डालते हुए प्रश्न उठाया कि शायद सन् २००० तक तो इस संसार में कोई भी स्वस्थ्य व्यक्ति नहीं बचेगा, अतः सबको स्वास्थ्य प्रदान करने का सपना कैसे साकार हो सकेगा। उनके प्रश्न का समाधान करते हुए अंत में ईश्वरीय विश्वविद्यालय की राजस्थान जोन प्रभारी दादी रत्नमोहिनी जी ने अपने आशीर्वचन में स्पष्ट किया कि राजयोग एक सहज मानसिक ध्यान है। भोले-भाले अशिक्षित गरीब ग्रामीण से लेकर वैज्ञानिक तक हर वर्ग का व्यक्ति इसे सहज ही कर सकता है। इससे केवल मानसिक तनाव, अशांति और बीमारी ही दूर नहीं होती, बल्कि व्यक्ति को समस्त बुरी आदतों पर विजय पाकर आदर्श जीवन यापन करने की प्रेरणाशक्ति भी मिलती है। जिससे स्वस्थ्य एवं आदर्श समाज का निर्माण होता है। उन्होंने दृढ़ता पूर्ण शब्दों में कहा कि ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज योग की शिक्षा जन-जन को देकर विश्व को श्रेष्ठतम स्थिति की ओर ले जाने का प्रयास चल रहा है। तथा वैसा स्वर्णयुगी दैवी संसार सन् २००० तक अवश्य ही हो सकेगा जहां सभी सम्पूर्ण स्वस्थ्य, सुखी एवं सम्पन्न होंगे।

चंडीगढ़ के रेडियोलॉजी के प्रोफेसर डॉ. जी.एस. लाम्बा ने आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों पर

शेष पृष्ठ २४ पर

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, प्रकाशक तथा सम्पादक ने 'ओमशांति प्रेस' बी-7/27, कृष्णानगर, देहली-51 से छपाया। मुख्य सम्पादक ब्र.कु. जगदीश चंद्र हसीजा
Regd. No. 10563/65-D. (E)—70